किशोर-उपन्यास माला क्रम ४

हल्दी घाटी

मनहर चौहान



उमेश प्रकाशन
५, नाथ मार्केट, नई सड़क दिल्ली ६



⊙ प्रकाशक
उमेश प्रकाशन,
5-बी, नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली-110006

⊙ संस्करण
1987

⊙ मूल्य
Rs 12 00

○ मुद्रक
प्रिंट आर्ट,
नवीन शाहदरा, दिल्ली 110032

HALDI GHATI
by
Manhar Chauhan
Rs 12 00

□□ किशोर उपन्यास-माला

का

उद्देश्य

अगर आप सोचते हैं कि किशोरों के अच्छे उपन्यास हिन्दी में नहीं हैं तो निश्चय ही आपको हमारी किशोरों के लिए उपयोगी पुस्तकें पढ़ने या देखने का अवसर नहीं मिला है। एक-दो या चार दस नहीं, बल्कि १०० के करीब किशोर-उपन्यास हम प्रकाशित कर चुके हैं, आगे और प्रकाशित करने जा रहे हैं।

विषय भी हमने अनेक चुने हैं। ऐतिहासिक नायक नायिकाएं, 'अरब की रातों' के राजा रानी, ज्ञान विज्ञान का अनोखापन रामायण और महाभारत के पात्र, राष्ट्र और विभिन्न धर्मों के नायक, शिकार की रोमांचकारी घटनाएं, प्रख्यात साहित्यकारों का जीवन और शेक्सपियर के नाटकों के रूपान्तर—कोई भी तो विषय ऐसा नहीं, जिसकी जानकारी निहायत दिलचस्प उपन्यासों के माध्यम से न दी गई हो। किशोर तो किशोर किशोरों के माता पिता भी अगर इन्हें लेकर बैठ जाएं तो पढ़ते ही रह जाएं।

□

कहने को तो ये किशोर-उपन्यास हैं, किन्तु नवसाक्षरों, अहिन्दी-भाषी पाठकों तथा भारत की रक्षा के लिए नियुक्त जवानों के लिए भी ये समान रूप से उपयोगी हैं।

□

राष्ट्र के नए नागरिकों का निर्माण—यही है हमारा उद्देश्य !

□

लेखक की अन्य किशोरोपयोगी पुस्तकें

- खूब लडी मर्दानी
- जय भवानी
- पूपू
- रूना और लल्लो
- हाथी का शिकार
- रंग बिरंगी परियां
- देश-देश की परियां भारत आईं

खून की सौगन्ध

"कुवर जगमल कहा हैं ?" राजपुरोहित ने चारो ओर देखा लेकिन जगमल का कही पता नही था।

"कितनी बुरी बात है ! कम से कम इस समय तो उन्हे उपस्थित होना चाहिए।" वहा खडे सामन्तों मे से एक ने कहा, "कुवर शक्तिसिह भी तो अभी तक नही आए।"

तय यह किया गया कि थोड़ी देर और इन्तजार किया जाए। अगर कुवर जगमल आ जाए तो ठीक, वरना कुवर प्रतापसिंह की आज्ञा से स्वर्गीय राणा उदयसिंह के शव मे आग लगाई जाए।

उन दिनो मेवाड राज्य की ऐसी ही परम्परा थी। राजा की मृत्यु होते ही उसके उत्तराधिकारी को राजा मान लिया जाता। और जब तक यह नया राजा अनुमति न देता, पुराने राजा का शव न जलाया जाता।

आमतौर पर सबसे बडा बेटा ही राजा का उत्तराधिकारी होता है लेकिन राजा की इच्छा हो तो उसका यह अधिकार छीन सकता था। इस बार यही हुआ था। राणा उदयसिंह के सबसे बड़े बेटे कुवर प्रतापसिंह थे, लेकिन उदयसिंह ने उन्हे उत्तराधिकारी नही बनाया था। उत्तराधिकारी बनाया गया था कुवर जगमल, जो कुवर प्रताप के बाद सबसे बडा राजकुमार था।

उदयसिंह ने ऐसा क्यों किया ? क्या कुवर प्रताप से कोई अपराध हो गया था ? नही। बल्कि सचाई ठीक विपरीत थी। प्रताप मे जो गुण थे उनका जगमल मे नामोनिशान भी नही था।

उसने पिता के अन्तिम सस्कार मे भी समय रहते सम्मिलित होना आवश्यक न समझा था। यही हाल उसके दूसरे भाइयो शक्तिसिह आदि का भी था।

जगमल की मा ही राणा उदयसिह की सबसे प्रिय रानी थी। उसी के कहने मे आकर राणा प्रताप जैसे योग्य राजकुमार से गद्दी छीनने की भूल की थी। राजपूतो के महान् नेता राणा सागा की मृत्यु के बाद ऐसा कोई वीर नही बचा था जो मुगलो से सफलतापूवक टक्कर ले सकता। उदयसिह मे भी वे गुण नही थे। उसने अपने दिन केवल ऐशोआराम मे गुजारे थे।

"कुवरजो," पुरोहित ने प्रताप की ओर देखा, "मुहूत बीत रहा है। लगता है, कुवर जगमल अब नही आएगे। जैसी ईश्वर की इच्छा। आप आज्ञा दीजिए ताकि चिता जलाई जाए।"

सामन्तो ने भी एक स्वर से इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया।

"परन्तु यह अधिकार तो राणा का है। मेरे पिता ने कुवर जगमल को राणा वनाया है। मैं अग्निदान की आज्ञा कैसे दे सकता हू?" प्रताप ने गम्भीर स्वर में कहा।

"नही नही," एक साथ कई आवाजें उठी, "हम आपको ही राणा मानते हैं, कुवर जगमल को नही। आज्ञा दीजिए।"

'जल्दी कीजिए, महाराज!" पुरोहित बुदबुदाया, "मुहूत निकल रहा है!"

चिता धू-धू कर जल उठी।

राजपुरोहित के गम्भीर मन्त्रोच्चार वातावरण में गूज रहे थे। अचानक दो घोडो की टापें सुनाई पडी। सभी चौक उठे। प्रताप ने आवाज की दिशा में आखें उठाईं। अगले घोडे पर जगमल था। उसके पीछे शक्तिसिह दिखाई पडा।

"कुवर आ गए!" एक सामन्त ने हल्के स्वर मे कहा।

दोनो घोडे धूल उडाते हुए पास आ रुके।

शक्तिसिंह नीचे उतरा। उसका चेहरा कठोर था। बडे भाई प्रताप की ओर देखकर उसने रूखेपन से पूछा, "अग्निदान की आज्ञा किसने दी?"

जगमल अभी तक घोडे से न उतरा था। वह चिता की लपटो को घूर रहा था जो उसके पिता के शव को राख में बदल रही थी। उसकी आखो में क्रोध की चमक आई। बिना उसकी आज्ञा के चिता जला दी गई थी। मेवाड के राणा का यह अपमान! उसने होठ काटे और नीचे उतर पडा।

सामन्त चुप थे। पुरोहित ने मन्त्रोच्चारण जारी रखा। प्रताप ने सामने आकर गम्भीरता से कहा, "आज्ञा मैंने दी है, क्योकि मुहूर्त बीत रहा था। अभी शान्त रहो। दाह पूरा हो जाने दो।"

जब चिता जल चुकी तो जगमल ने कर्कश स्वर मे कहा, "आप लोग थोडी और प्रतीक्षा कर सकते थे। अग्निदान की आज्ञा केवल राणा दे सकता है। यह मेवाड की परम्परा रही है।"

एक क्षण के मौन के बाद पुरोहित का शान्त स्वर सुनाई पडा, "आप उत्तेजित क्यो है? मेवाड की परम्परा पूरी तरह निभाई गई है।"

"क्या मतलब?" शक्तिसिंह आगे आया।

"अग्निदान की आज्ञा मेवाड के राणा ने ही दी है, राणा प्रताप ने।"

जगमल और शक्तिसिंह चौंके। अपनी लापरवाही से स्वय उन्ही का कितना बडा नुकसान हुआ था, यह समझते उन्हे देर न लगी। शक्तिसिंह का हाथ तुरन्त तलवार की मूठ पर चला गया लेकिन जगमल उसे रोकता हुआ फुसफुसाया, "अभी नही।"

'अभी नही तो कब?' शक्तिसिंह ने आखो ही मे पूछा।

जगमल सामन्तो के चेहरो पर उभरे भाव पहचान रहा था।

अगर शक्तिसिंह इस समय प्रताप पर आक्रमण करेगा तो वे सामन्त उसे जीवित छोड़ने वाले नहीं । ज्योंही उसका हाथ तलवार पर गया था, वे सावधान हो गए थे । वे पहले से ही जगमल तथा उसके साथियों से खार खाए बैठे थे, क्योंकि जगमल को उत्तराधिकारी बनाने से पहले उदयसिंह ने उनसे सलाह नहीं ली थी ।

शक्तिसिंह ने मुट्ठियां भींचीं और सोचा, 'प्रताप को मारकर ही रहूंगा ।' सत्ता के मोह ने उसकी आंखों पर पर्दा डाल दिया था । वह भूल चुका था कि प्रताप उसी का भाई है और इस समय यहां निहत्था खड़ा है ।

जगमल ने शक्तिसिंह से वादा किया था कि गद्दी मिलने के बाद वह उसे सेनापति बना देगा । प्रताप से उसे ऐसी सत्ता पाने की कोई सम्भावना नहीं थी । प्रताप का झुकाव जगमल या शक्तिसिंह की ओर बिल्कुल नहीं था ।

लेकिन अगर प्रताप की हत्या कर दी जाए, तो ?

तब सबसे बड़ा राजकुमार जगमल ही बैठेगा गद्दी पर—और ज्योंही वह बैठेगा, शक्तिसिंह का सेनापति बनने का सपना पूरा हो जाएगा ।

□

'राणा प्रताप की ''

''जय !''

पूरे मेवाड़ में नारे गूंज रहे थे । खुशी का सागर लहरा रहा था । फुलझड़ियां रात के आकाश में अठखेलियां कर रही थीं ।

और दुष्ट शक्तिसिंह खामोशी से राजपुरोहित के घर की ओर बढ़ रहा था । रह रहकर वह आवेश से दांत भींचता और सोचता, प्रताप आशीर्वाद लेने पुरोहित के यहां गया है । उसे पुरोहित नहीं, मेरी तलवार आशीर्वाद देगी ।



दरवाजा खुला था। भीतर ढीबरी की पीली रोशनी फैल रही थी। शक्तिसिंह आगन मे पहुचा। दरवाजे पर टिठककर उसने आहट ली। भीतर से राणा प्रताप का भावुक स्वर सुनाई पड़ा, "मैं प्रतिज्ञा करता हू कि जब तक मेवाड को पूरी तरह स्वतन्त्र न करा लूगा सोने-चादी के बरतनो मे नही खाऊगा, घास के बिछौने पर सोऊगा और केश नही कटाऊगा। मैं वीर बप्पा रावल, राणा सागा और सीसौदिया सूर्य की सौगन्ध खाकर कहता हू कि जब तक मेरी जन्मभूमि पराधीन रहेगी, मैं चैन की नीद न लूगा।"

"अभी सदा की नीद सुलाता हू तुझे!" सोचते हुए शक्तिसिंह ने भीतर झाका। राणा प्रताप राजपुरोहित के सामने झुके हुए थे।

"आओ-आओ, शक्ति भीतर आ जाओ।" राजपुरोहित ने कहा। शक्तिसिंह काप गया। इतनी सावधानी के बावजूद राज-पुरोहित ने कैसे देख लिया उसे? इसकी आखें क्या दीवार को आरपार भेद सकती हैं?

मुस्कराने की कोशिश करता हुआ वह भीतर घुसा। राणा प्रताप व्यग्य से हसे, "आओ भाई, आज राजपुरोहित का घर कैसे याद आ गया?"

"सौगन्ध लेने और लिवाने का नाटक देखने आया हू।" शक्तिसिंह का उत्तर था।

राजपुरोहित मुस्कराया, बोला—"कुवरजी, प्रताप हमारे महाराणा हैं। हमे इनसे आदर के साथ बात करनी चाहिए। जब राणा उदयसिंह जीवित थे, तब आप दोनो भाई-भाई थे, लेकिन अब राणा और राणा के सहायक का नाता उस भाई के रिश्ते से भी ऊपर है।"

"मैं इसे नही मानता।" खच से शक्तिसिंह ने तलवार खीच ली। ढीबरी की फीकी रोशनी मे भी उसकी धार कौंधी।

"अरे, यह क्या ?" पुरोहित पीछे हटा।

"शक्ति !" राणा प्रताप भी तलवार खीच चुके थे, 'होश म आओ !"

शक्तिसिंह झपटा। तलवारे खनक उठी।

दूर से जय जयकार के शब्द सुनाई पड रहे थे, "राणा प्रताप को जय !" और यहा

राजपुरोहित ने कातर होते हुए निवेदन किया, "शक्ति ! पागलपन छोडो !"

खन ! खन !

"शक्ति ! मैं कहता हू, रुक जाओ !"

खन ! खनाक !

"शक्ति ! रुक जाओ वरना मैं सामने कूद पडूगा !"

खनाक ! खनाक !

और अगले ही क्षण शक्तिसिंह की तलवार राजपुरोहित के पेट मे खच् से घस गई। शक्तिसिंह की आखे फट गईं।

"यह क्या किया, शक्ति !" प्रताप नीचे झुके।

सचमुच पुरोहित लडते हुए भाइयो के बीच कूद पडा था। शक्ति की तलवार उसके पेट मे गहरी उतर गई थी। पुरोहित की सास रुध रही थी, "शक्ति ! प्रताप ! वादा करो कभी नही लडोगे "

"तुम तुम भी बोलो शक्ति, बो लो !"

शक्तिसिंह सिर झुकाकर चुप खडा था ! प्रताप ने गहरी दृष्टि से उसकी ओर देखा। यह बोल क्यो नही रहा ! क्या अभी इसका पागलपन दूर नही हुआ ? क्या है इसके मन में ?

शक्ति दूसरी ओर घूम गया।

"शक्ति नही बोला, प्रताप !" राजपुरोहित की रगें तन रही थी। मौत उसकी सास के धागे उलझा रही थी, "गगा

ज ल"

प्रताप ने गगाजल उसके मुह में डाला। हल्का-सा झटका खाकर राजपुरोहित का सिर एक ओर झूल गया। शक्तिसिंह की खून से नहाई नगी तलवार एक तरफ पडी थी।

अचानक दौडकर शक्तिसिंह ने तलवार उठाई। प्रताप फुर्ती से खडे हो गए। क्या शक्ति फिर से वार करेगा ? लेकिन शक्तिसिंह झपटकर बाहर निकल गया। उसके चेहरे पर पश्चात्ताप और शर्म साफ झलक रही थी।

लेकिन वह भागा क्यो ? किधर ?

जगमल कहा है ? प्रताप के माथे पर सिकुडनें उभर आई।

२ लोहे के चने

दीवार की खूटी चमडे का काला पट्टा लटक रहा था। जगमल अपनी कटार उस पर घिसता हुआ धार तेज कर रहा था। शक्तिसिंह हाफता हुआ भीतर घुसा और बोला, "भागने की तैयारिया करो !"

"क्यो ? प्रताप को मार डाला ?" जगमल उसकी ओर घूमा।

"मार आता तो बात ही क्या थी !" हाफते हुए शक्तिसिंह ने सारी घटना कह सुनाई। अब हमारे पास एक ही रास्ता है, यहा से भाग जाए। प्रताप हमे जिन्दा नही छोडेगा।"

इससे पहले कि राणा प्रताप पर आक्रमण किए जाने की बात जोर पकडती, शक्तिसिंह और जगमल उदयपुर का किला छोड चुके थे। धूल उडाते, हाफते और पसीने से तर घोडे अपने

स्वामियों को लादे हुए दिल्ली की ओर भाग रहे थे—दिल्ली की ओर, बादशाह अकबर की राजधानी की ओर!

इसके सिवा और कोई चारा भी नही था। भाई के साथ विश्वासघात करने के बाद वे अपना काला चेहरा राजपूतों मे कैसे दिखा सकते थे? अब वे जन्मभूमि मेवाड के साथ विश्वास घात करने पर तुल गए थे और चौकन्नी दृष्टि से चारो ओर देखते हुए दिल्ली की ओर लपके जा रहे थे।

दो दिनो तक लगातार भागते रहने के बाद जरूरी हो गया कि कही लेटकर थोडी नीद ली जाय। रास्ते मे अपने सहायको मे उन्होने तीन बार घोडे बदले थे और मेवाड से सैकडो मील दूर निकल आए थे।

रात के पखो को फैले ज्यादा देर नही हुई थी। दोनो एक कस्बे मे घुसे। बाजार अभी खुला हुआ था। यदि वे चाहते तो कस्बे के मुखिया के यहा ठहरकर मोटे गद्दो पर चैन की नीद ले सकते थे, लेकिन उन्हे पहचाने जाने का भय था, इसलिए वे एक छोटी-सी धर्मशाला मे पहुचे। वही खाना खाया। धर्मशाला की कोठरी का फर्श धूल से पटा हुआ था, लेकिन दोनो इतने थके हुए थे कि उन्होने धूल पर ही अपनी पगडिया बिछा दी और लेटे रहे। कोठरी मे रखा दीया जल रहा था।

"जगमल भाई, कही अकबर ने हमे दुत्कार दिया तो हम न घर के रहेगे न घाट के।"

"शी !" जगमल ने होठो पर उगली रखकर कहा, "धीरे बोलो, रात के सन्नाटे मे आवाज दूर तक फैलती है।" उसने दरवाजा बन्द कर दिया और भीतर से कुण्डी लगाकर बोला, "बादशाह हमे नही दुत्कार सकता। यह असम्भव है। तुम देखना दिल्ली पहुचते ही हमे कोई जागीर मिलेगी या सेना मे कोई बडा पद।"

शक्तिसिंह दीपक की लौ देखता रहा जिसके नुकीले छोर से काले धुए का धागा कापता हुआ छत की ओर उठ रहा था।

अकबर की शक्तिशाली सेनाए उत्तर भारत मे बडी तेजी से मुगल साम्राज्य का विस्तार कर रही थी। राजस्थान के अधिकाश राजा-महाराजा अकबर की अधीनता स्वीकार कर चुके थे। अकबर ने उन्हे अपने दरबार मे बडे बडे पद देकर सम्मानित किया था। बदले मे राजपूत राजाओ ने अपने घराने की कन्याए अकबर के साथ या मुगल घराने मे किसी और के साथ ब्याह दी थी। इस प्रकार के विवाह-सम्बन्ध बनाकर अकबर गहरी चाल खेल रहा था क्योकि इसके बाद राजपूत विद्रोह नही कर सकते थे।

राजपूतो मे सबसे शक्तिशाली मानसिंह था। उसने भी अपनी बहन जोधाबाई की शादी अकबर से कर दी थी।

अरावली पवत की गगनचुम्बी चोटिया और उनकी हरियाली करवटें झरनो की मधुर कलकल हवा को गुदगुदा रही थी। एक सकरी पगडण्डी जगल को बीच से काट रही थी। दोनो ओर के वृक्षो पर जगली चिडियो का शोर दूर से सुनाई पडती बन्दरो की हूप हूप

दो घोड धीमी चाल से आगे बढ रहे थे। सुबह और दोपहर के बीच का समय था। एक घोडे पर राणा प्रताप सवार थे, दूसरे पर सादडी के सरदार माना झाला।

राणा प्रताप का घोडा चेतक ! आख के इशारे से ही हवा को भी पीछे छोड देने वाला चेतक ! उसकी सुघड पीठ पर जरी के काम वाली खूबसूरत जीन कसी हुई थी। राणा के पैर रकाब के झटको के साथ थोडे थोडे हिल रहे थे। सिर पर मेवाड का गौरवशाली राजछत्र तना हुआ था। कमर से लटकती तलवार, पीठ पर बधे तरकश और दाहिने कधे पर रखी कमान की शान



अनोखी थी। उठी हुई नुकीली मूछें उनके चेहरे का तेज और बढा रही थी।

माना झाला ने कहा, 'शक्तिसिंह और जगमल अकबर से मिल गए, यह उनकी नादानी ही कही जाएगी।"

राणा प्रताप ने गम्भीरता से उत्तर दिया, "लेकिन झाला, मैं पहले से ही जानता था कि ऐसा होगा। शुरू से ही दोनो की रुचि मौज-शौक की ओर थी। बार बार समझाने पर भी ये सही राह पर न आ सके।"

"सुना है, अकबर ने जगमल को सरोही का सहयोगी सूबेदार बना दिया है।"

"सहयोगी सूबेदार?'

"हां। सरोही मे पहले अकेला राव सुरतान सूबेदार था। अब उसके साथ जगमल भी सूबेदार है। शक्तिसिंह को मुगल-सेना मे महत्वपूर्ण पद दिया गया है।"

प्रताप हंसे—"उसका सेनापति बनने का सपना मेवाड मे तो नही, मेवाड के बाहर अवश्य पूरा हुआ!"

माना झाला भी थोडा हंसे।

उसी समय करीब मे ढोल-ढमाके की आवाज आई।

"हम आ पहुचे हैं।" माना झाला ने कहा।

ये दोनो भीलो के मुखिया से मिलने जा रहे थे। ये भील अरावली पर्वत की गोद मे रहते थे और बडा ही कठिन पहाडी जीवन व्यतीत करते थे। तीर कमान से शिकार करना तथा पशु-पालन—यही उनकी आजीविका के साधन थे।

मुखिया झोपडी से बाहर निकल आया। ढोल पीट रहे भीलो की ओर देखकर उसने हाथ हिलाकर जोर से बाजे बजाने का संकेत किया, बोला, "और जोर से पीटो! नीले घोडे का सवार आ गया! मेवाड का राणा आ गया!"

ढम ढम ढम ! धचिक्क ! धचिक्क !

चेतक आगे था, माना झाला का घोडा पीछे। चेतक का गहरा काला रग दूर से नीली झाईं-सा दिखाई पडता था। उसके लम्बे, पतले, मजबूत पैर यो थिरक रहे थे मानो ढोलक की ताल पर नृत्य कर रहे हो।

ढम धचिक्क ! धचिक्क ढम धचिक्क !

पहले राणा प्रताप चेतक से उतरे, फिर माना झाला उतरे। मुखिया की बाछें खिल गईं, "स्वागत है। विराजिए !"

दो दासिया झोपडी से निकली। उन्होने अभिवादन किया और तीनो के लिए आसन रखकर वापस चली गईं। राणा प्रताप और माना झाला मुखिया से गले मिलकर बैठ गए।

उनके स्वागत मे भील युवक-युवतियो ने लोकगीत गाते हुए नृत्य किया। भोजन आदि से निबटने के बाद मुखिया उन्हे झोपडी मे ले गया और बोला, "मैं जगली चाहकर भी आपका योग्य स्वागत नही कर सका। क्षमा करिएगा।"

"नही-नही, ऐसी कोई बात नही है। सबसे बडी चीज मन की सचाई है जो हमने आपमे पाई है।" माना झाला ने कहा।

मुखिया बैठता हुआ विनम्रता से बोला, "अब बताइए, आपने यहा आने का कष्ट क्यो किया ? मुझ दास से आपकी क्या सेवा हो सकती है ?"

राणा प्रताप ने मुखिया की ओर गहरी दृष्टि से देखा, "सौदा महगा है। भीलो को मेवाड पुकार रहा है !"

"मेवाड हमारी मा है। हम उसके लिए जान भी लडा देंगे।"

"देखिए मुखिया जी, लगभग पूरे राजस्थान को अकबर अपने कब्जे मे कर चुका है। जो भाग स्वतन्त्र बच पाया है, उसमे मेवाड सबसे महत्वपूर्ण है। स्पष्ट है कि उसी पर अकबर सबसे पहले आक्रमण करेगा।"

"हा, इसमे अब देर भी नही है।" मुखिया ने हामी भरी।

"हमे जल्दी से जल्दी मुकाबले की तैयारिया करनी हैं। मेवाड़ की सेना के लिए भील तीरदाज चाहिए।"

"बस, इतनी सी बात? जितने तीरदाज चाहिए, ले जाइए।"

"हमने एक और युक्ति सोची है," माना झाला आगे झुके, "हमे बताइए, उस पर आपका विश्वास जमता है या नही।"

राणा प्रताप की दसो उगलिया आपस मे उलझ गई थी। मुखिया की ओर गम्भीर दृष्टि से देखकर बोले, "मैं पूरे मेवाड को उजाड देना चाहता हू।"

"जी?" मुखिया चौंक गया। राणा यह क्या कह रहे हैं?

"हा, मेवाड बिल्कुल उजड जाना चाहिए। वहा किसी खेत मे हरियाली नही होगी, किसी कुए मे पानी नही होगा। लोग तमाम गाव और शहर खाली कर देंगे। उनके मकानो मे जगली जानवर रहेगे।"

'महाराणा, आप कहना क्या चाहते हैं?"

"वही जो कह रहा हू। मेरे शब्दो के दो अर्थ नही हैं।"

"लेकिन मेवाड के उजडने से लाभ?"

"बहुत बडा लाभ है" माना झाला बोले, "यह समझना अपने को धोखा देना होगा कि मुगलो को मेवाड अवश्य हरा देगा। उनकी बडी सेना के सामने हमारे जवान मुट्ठीभर ही साबित होगे। इसलिए हम मेवाड को उजाडना चाहते है, ताकि जीतकर भी मुगल यहा टिकने न पाए। जब उनके लिए न खाने को होगा, न पीने को तो वे यहा रुककर क्या करेंगे?"

"वापस चले जाएगे?"

"क्यो नही! उन्हे जाना पडेगा।" राणा प्रताप बोल उठे, वे बाहर से पानी, भोजन और मास ला लाकर कब तक जीवित

रहेगे ? और जैसे ही वे विदा होगे, राजपूतो का विद्रोही झण्डा फिर से लहरा उठेगा।"

"बताइए, इस युक्ति से आप सहमत है या नही ?" माना झाला का प्रश्न था।

मुखिया गहरे सोच मे डूब गया, "लेकिन मेवाड उजडने के बाद उसकी जनता कहा जाएगी ?"

"अरावली पहाड की गोद मे। वह यहा क झरना का पानी पिएगी और कन्द-मूल, फल-फूल खाकर जीवित रहेगी। आप लोग भी तो रहते है न !"

"लेकिन हमे तो इस कठोर जीवन की जन्म से ही आदत पड चुकी है। कस्बो और शहरो क लोग यहा रह सकेंगे ?"

"क्यो नही ? मेवाड का हर स्त्री-पुरुष, बच्चा-जवान और बूढा सैनिक है, और सैनिक के लिए पहाडो की गोद और फूलो की सेज में कोई अन्तर नही होता।"

मुखिया उत्साह से उठ खडा हुआ, "आपकी यह युक्ति अद्भुत है। हम मुगलो को लोहे के चने चबाकर रहेगे।"

दोनो राजपूतो ने अपनी तलवारें निकाल लीं और मुखिया ने जहर बुझा तीर निकाला। तीनो हथियार पास लाकर छुआए गए, ऊपर उठाए गए। तीनो स्वर एक होकर गूज उठे, "जय एकलिंग ! जय मेवाड !"

३ घाव कब भरेगा ?

वह कडवी याद चित्तौड के पतन की वह कडवी याद

राणा प्रताप घास के बिछौने पर लेटते और उनकी आखों -

के सामने चित्तौड का किला घूम जाता जहा कभी वीर सीसोदियो का सूर्य-मुखी झण्डा फहराता था। दूर दूर तक कीर्ति फैली हुई थी इस झण्डे की।

लेकिन आज?

आज वह झण्डा उतर चुका था। उसके स्थान पर फहरा रहा था मुगलो का, बादशाह अकबर का झण्डा।

मेवाड के कितने ही महत्वपूर्ण किलो पर मुगलो के दात गड चुके थे! कब उखडेंगे वे? उनके घाव कब भरेंगे?

राणा को नीद न आती। करवटो पर करवटें बदलते रहते। उन्हे पिता उदयसिंह की कायरता याद आती। वह मन ही मन सोचते, देव एकलिंग! कौन-सा अपराध किया था मैंने? मुझे कायर बाप का बेटा क्यो बनना पडा?

सचमुच उदयसिंह ने राजपूतो की वीरता पर कलक का टीका टीका ही तो लगाया था! ज्यो ही उसे समाचार मिला था कि अकबर की सेनाए चित्तौड की ओर रवाना हो गई हैं, वह चित्तौड से भागकर पहाडियो मे छुप गया था।

राजपूत और पीठ दिखाकर भागे?

राणा प्रताप चाहकर भी इस पर विश्वास न कर पाते। उन्हें लगता कोई बुरा सपना देखा है उन्होने।

लेकिन सचाई सचाई थी। उदयसिंह ने जो किया था, उसका फल मेवाड आज तक भुगत रहा था। मेवाड का चित्तौड और उस पर मुगलो का झण्डा!

उदयसिंह पीठ दिखाकर अकेला ही नही भागा था, साथ मे अपनी कई रानियो, बेटो तथा दास-दासियो को भी ले गया था। भागने वाले उन बेटो मे जगमल और शक्तिसिंह भी थे। उदयसिंह ने कहा था, "आओ बेटा प्रताप, साथ चलो।' लेकिन प्रताप ने साफ जवाब दिया था, "नही, मैं नही जा सकता। मैं चित्तौड की

रक्षा करूगा।"

"चित्तौड की रक्षा हमारे सेनापति कर लेंगे। हमे सकट मे पडने की क्या आवश्यकता है ?"

प्रताप ने कटुता से जवाब दिया था, जब आपको विश्वास है कि चित्तौड की रक्षा हो जाएगी तो भाग क्यो रहे है ?"

उदयसिह को कोई जवाब देते न बना था लेकिन यह उससे कैसे सहन हो सकता था कि उसका बेटा उसी से उलझे ? उदयसिह का चेहरा कठोर हो गया था। जगमल तुरन्त बोला था, "प्रताप साथ चलना हो तो चलो और रुकना हो तो रुको। तुम्हारी मनोवल करने का समय हमारे पास नही है।"

"आप जाइए, मैं यही ठीक हू।"

दया व घृणा के मिले-जुले भावो से उनकी ओर देखकर जगमल ने मुह बिचकाया था मानो प्रताप बहुत बडी मूर्खता करने जा रहे हो। और चले गए थे वे लोग—सफेद खून वाले वे कायर राजपूत!

ज्यादा से ज्यादा हथियारो और खाने पीने की सामग्री का प्रबन्ध करके चित्तौड का किला अन्दर से बन्द कर लिया गया।

फिर एक दिन दूर से युद्ध के नगाडो की आवाज आई। प्रताप ने किले की दीवार पर चढकर देखा। अकबर की विशाल सेना आ पहुची थी और किले पर घेरा डाल रही थी। हाथी चिंघाड रहे थे, घोडे हिनहिना रहे थे। रह-रहकर सैनिको की टुकडिया 'अल्ला हो अकबर' के नारे लगाती थी। हाथियो की कतारें, रथो की कतारें, घोडो की कतारें, प्यादो की कतारें! चारो ओर शत्रुओ का समुद्र-सा लहरा रहा था।

किले के भीतर लगभग आठ हजार राजपूत हथियारों से लैस होकर तैयार थे, लेकिन मुगल-सेना उनसे कई गुना बडी थी। उसमे हजारो सैनिक उन देशद्रोही राजपूतो के भी थे जो अकबर

से मिल गये थे। ये सैनिक जानते थे कि राजपूत किन किन तरीको से युद्ध करते हैं। घर के भेदियो के कारण मुगलसेना की ताकत वैसे ही दुगुनी हो गई थी।

किले की दीवार मे बने छेदो मे से चित्तौड की तोपें निशाने लेने लगी। वे रह रहकर गरज उठती और मुगल सेना का एक हिस्सा छितरा जाना।

लेकिन कब तक गरजेंगी ये तोपें ? कब तक चित्तौड का बारूद समाप्त न होगा ? मुगल सेना मे सनिको की कमी नही थी। सौ मरते तो पाच सौ उनकी जगह ले लेते। और मुगलो की तोपें भी कम शक्तिशालिनी थोडे ही थी ! चित्तौड की तोपें एक बार आग उगलती तो वे दस बार उगलती। बडे बडे गोले हवा मे उछलकर किले की दीवार फाद जाते और भीतर गिरकर भयानक विनाश मचा देते।

एक के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा, यो छह् महीने बीत गए। चित्तौड उजड चुका था। उसके सैकडो सेनानायक मारे गये थे। भोजन समाप्त ही होने को था। चारा न मिलने के कारण घोडे दुबले हो गए थे।

धाय ! धडाम !

गोले छूटते। आकाश मे उनकी प्रतिध्वनिया गडगडा उठती। धमाके से कापती हवा किले के भीतर आती और मौत अट्टहास कर उठती, "राजपूतो, सावधान ! मैं आ रही हू !"

तब राजपूतो ने भी कह दिया, 'आओ, तुम्हारा ही इन्तजार है !"

घोषणा कर दी गई—जौहर होगा। राजपूत रमणियो ने अपने वीरो को केसरिया वस्त्र पहनाए, तिलक किया, पूजा की, चावल चढाए, तलवार थमाई और गद्गद स्वर म कहा, 'जाओ और कभी वापस मत आओ। आओगे, तो भी हम जीवित नही

मिलेंगी।"

वीरो के चेहरे आवेग से लाल हो गए थे। अन्तिम विदा दी जा रही थी उन्हे! बोले, "हम जा रहे हैं, रणभूमि हमे बुलाती है। और जाओ तुम भी, तुम्हे आग बुलाती है। जीवत मत रहना। रहोगी, तो भी हमे कभी नही देखोगी।"

सुबह दरवाजे खुलने वाले थे। रात को गोलाबारी रोक दी गई। सुगन्धित चन्दन की तीन विराटकाय चिताए तैयार की जा रही थी—सीसोदिया, राठौर और चौहान राजपूतो के डेरो पर।

आग की खुराक—घी और तेल। खूब भडकेंगे शोले! जितना घी जहां था, जितना तेल जहा था, जितना चन्दन जहा था, इकट्ठा किया गया।

मुगलो ने भी गोलाबारी रोक दी थी—लगातार युद्ध करने के बाद आराम जरूरी था।

रात को किले के भीतर रोशनी फूटती दिखाई दी। अधेरी रात मे लाल-पीली लपटें भयावह लग रही थी, जो लगातार तेज होती जा रही थी।

फिर नगाडे गडगडा उठे—ढिकढिक ढम कडिक कडिक कभी इस शोर का तीखापन कम होता तो राजपूत रमणियो के मगल गीत के सम्मिलित स्वर सुनाई पडते। वे गा रही थी जिंदगी के गीत गा रही थी और आलिगन कर रही थी मौत का!

"जय मेवाड! जय मेवाड!!" चिता को घेरकर खडे राजपूत नारे लगा रहे थे। पास के छज्जे से चार चार, पाच पाच, दस-दस की टोलियो मे स्त्रिया आग मे कूद रही थी। किसी की तो आंख मे आसू होता! किसी के तो होठ जरा बिदकते! किसी के तो पैर जरा कापते! वे गम्भीर चेहरा लिए छज्जे पर आती और कूद जाती सुगन्धित लकडियो की पवित्र आग मे।

कडिक यडिक ढम कडिक

आग मे भुनती स्त्रिया कभी कभी चीखने लगती तो ढोल-नगाडो की आवाज तेज हो जाती। आग की लपलपाती जिह्वा उनके कोमल शरीर चाट रही थी। चटकती हड्डियो की कड कडाहट और जीवित मास जलने की बू चारो ओर फैली थी।

किसी की मा जल रही थी, किसी की बहन जल रही थी, किसी की बिटिया जल रही थी।

प्रताप तलवार की मूठ उगलियो मे भीचे एक ओर खडे थे। चिता की गर्मी से उनका चेहरा झुलस रहा था, लेकिन उत्तेजन मे उन्हे होश नही था।

धुआ! घुटन! चीखें! गडगडाते हुए नगाडो का रुदन!

"प्रताप!"

प्रताप ने पीछे घूमकर देखा। उसे फत्ता ने पुकारा था— सीसौदिया फत्ता ने, जो वीरता के लिए इतिहास मे अमर हो गया। प्रताप उनके करीब गए। फत्ता उन्हे एक कोने मे ले गया और उनकी आखो मे कुछ देर तक घूरने के बाद बोला, "प्रताप, तुम राजघराने के सबसे बड कुवर हो!"

प्रताप मुस्कराए, "कैसा राजघराना भाई! कल सुबह किला खुलेगा और सारा खेल समाप्त!"

लेकिन ऐसा नही होना चाहिए। देखो प्रताप, मैं चाहता हू, तुम जीवित रह जाओ। तुमसे मैंने बडी-बडी आशाए बाध रखी हैं।"

प्रताप खिलखिला पडे, "आप मेरी परीक्षा ले रहे है? क्या आप सोचते है, मैं भी अपने पिता की तरह पीठ दिखाकर भाग जाऊगा? नही? कल हम एक दूसरे के सिर उतरते देखेंगे। आप से ज्यादा यवन न मारे तो मेरा नाम प्रताप नही।"

फत्ता ने प्रताप के दोनो हाथ पकड लिए, "इस वीर घडी मे



अपने पिता की कायरता मत याद करो, कुवर!"

"याद आप ही ने दिलवाई है।" प्रताप ने हाथ छुडाने की कोशिश की लेकिन फत्ता ने उन्हे मजबूती से पकडा था।

"देखो कुवर, तुम्हारे पिता ने भागकर प्राण बचाए तो हैं पर कोई पूछे कि उनके प्राण बचने से जन्मभूमि को लाभ क्या हुआ? ऐसे कापुरुषो का जीवित रहना न रहना बराबर है। लेकिन तुम तो कापुरुष नही हो!"

"आपका आशय?"

"यही कि तुम गुप्त सुरग से बाहर निकल जाओ।"

'यह नही हो सकता!"

"पूरी बात तो सुनो! यदि तुम कल के युद्ध मे भाग लोगे तो मेवाड एक ऐसा वीर खो देगा जो आगे चलकर मुगलो का सबसे बडा शत्रु बन सकता है। मेरी बात मानो, प्रताप! चलो, सुरग की ओर। तुम्हारा चेतक प्रतीक्षा कर रहा है। तुम जीवित रहो, यह मेरी नही, मा मेवाड की इच्छा है। चलो, चलो भी!" उसने जबरदस्ती प्रताप को एक ओर धकेला।

उफ! उस दिन की कडवी याद यह रिसता घाव कब भरेगा?

चित्तौड के उस अन्तिम युद्ध को प्रताप अपनी आखो से नही देख पाए थे, लेकिन वह कितना भयानक रहा होगा, इसे वह खूब समझते थे।

सुबह किले का दरवाजा खोल दिया गया था और मतवाले राजपूत हुकारते हुए निकल पडे। उनके हाथो मे नगी तलवारें चमक रही थी, जो मुगलो को गाजर-मूली की तरह काट रही थी। एक-एक राजपूत ने मरने से पहले सैकडो को मौत के घाट उतारा।

फत्ता खप गया, उसके सारे वीर साथी खप गए। यवन

सेनाएं किले में घुसी तो उनका स्वागत किया जौहर की चिताओं के धधकते अंगारों ने, बिखरी हड्डियों और अधजले मांस के लोथड़ों ने।

मेवाड़ का सूना राजमहल अट्टहास कर उठा, "यवनो, तुम जीतकर भी हार गए!"

मुगल सिपहसालार आग बबूला हो गया, "कत्ल कर दो! सबको मार डालो!" वह चीखा।

जो भी सामने पड़ा—बच्चा, बूढ़ा, जवान, लूला, लंगड़ा—सबको मार डाला गया। चित्तौड़ के तीस हजार निहत्थे बेकसूर निवासी मुगल तलवार की बलि चढ़ गए। राजपूताने ने ऐसा भयानक कत्लेआम कभी नहीं देखा था। दोपहर होते-होते एक भी नगरवासी जीवित नहीं था।

अकबर पर जीत की खुशी की खुमारी चढ़ गई। उसके सामने जनेउओं का ढेर लगाया जा रहा था। खून से सराबोर लाल जनेऊ! चित्तौड़ की निरपराध जनता के जनेऊ! तराजू पर तोला गया उन जनेउओं को। वे ७० मन से अधिक थे!

४ जत्थे का अपमान

"मैं इस कत्लेआम का बदला लूंगा। चित्तौड़ मेरा है, मेवाड़ का है।" राणा को सब याद आता और वह उत्तेजित होकर हुंकारते।

उदयसिंह चित्तौड़ से भागकर उदयपुर के किले में चले गए थे, जो नया नया ही चुनवाया गया था। वहीं उनकी मृत्यु हुई और गद्दी पर राणा प्रताप आए।

योजना के अनुसार मेवाड उजाडा जा रहा था। जनता ने अपने सारे काम-धन्धे ठप कर दिए और मकानो को खाली करने लगी। समुद्र मे जैसे छोटी-छोटी लहरें उठती है, उसी तरह उनके छोटे-छोटे झुण्ड अरावली पर्वत की ओर बढते और जगलो मे समा जाते। किसी के चेहरे पर एक शिकन तक न थी। छिपा विद्रोह शुरू हो चुका था।

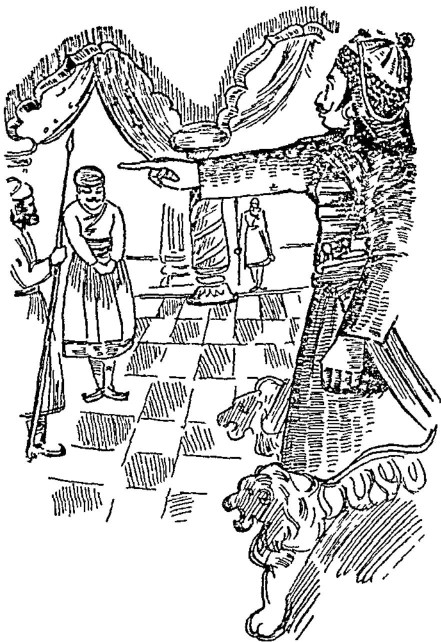
रात की खामोशी मे जगली जानवरो की दहाडें सुनाई पडती। लेकिन कुछ ही दिनो मे लोगो को इसकी आदत पड गई। हर समय वे अपने हथियार तैयार रखते—जाने कब जरूरत पड जाए! रात को आग जलाई जाती जिससे रोशनी होती रहे और जानवर भी दूर रहे। कई बार खूखार शेरो, भेडियो आदि से उनकी भिडन्त हो जाती, जिससे कभी कभार कोई जान से हाथ भी धो बैठना।

लेकिन सब खुश थे। उनका कायर राजा उदयसिंह मर चुका था और जो नया राजा गद्दी पर बैठा था, वह वीर था—बहुत वीर था। और वह तपस्वी भी था—घास के बिछौने पर सोता, पत्तल मे खाना खाता।

फिर साहम और धैर्य मे जनता कैसे पीछे रहती!

घोडा उदयपुर के राजमहल के सामने रुका। घुडसवार ने एक नवयुवक को रस्सो से बाधकर गठरी सा बना रखा था। घोडे से उतरकर उसने निर्दयता से उसे जमीन पर पटक दिया। युवक कराहा। घुडसवार ने उसके पैर के बन्धन इतने ढीले किए कि वह चल-फिर सके। "चल बेशर्म! अपनी सूरत राणा को दिखा!" घुडसवार ने उसे दरवाजे की ओर धकेला।

उसके दोनो हाथ पीठ की ओर करके जकड दिए गए थे। जब वह राणा प्रताप के सामने उपस्थित किया गया, शर्म के मारे वह सिर न उठा सका।



"महाराज, यह युवक खेती करता हुआ पकड़ा गया है।" घुड़सवार ने कहा।

राणा ने युवक की ओर जलती दृष्टि से देखा, "यह सच है ?" वह उठकर युवक के पास पहुच गए।

उनकी गम सास की छुअन महसूस करते ही युवक की धड़कनें बढ गईं और गले से एक शब्द भी न फूट सका।

"मेवाड मे खेती की मनाही है, तुम नही जानते ?"

"जानता हू महाराज, लेकिन लेकिन "

"लेकिन तुम अपनी जीभ के गुलाम हो। बोलो, तुम्ह क्या सजा दी जाए ?"

युवक ने ऊपर देखा। उसकी आखो मे आसू थे। "मुझे मुझे क्षमा कीजिए, महाराज, फिर कभी यह भूल न करूगा।"

प्रताप गम्भीर हो उठे, "जानते हो युवक, मैं तुम्हारी जगह होता तो क्या कहता ?"

युवक चुप रहा।

"मैं कहता कि मेरा सिर उतार लो, और उसे भाले की नाक पर टागकर पूरे मेवाड मे घुमाओ, जिससे सब देख सकें कि राजपूत अपराध क्षमा नही किया करते—भले ही वह पहला अपराध हो।"

युवक डर के मारे पीला पड गया।

पलभर मौन रहने के बाद राणा ने निर्णय दे दिया, "क्षमा मागने वाले इस कायर का वध कर दो !"

गुजरात के सामन्त ने अकबर के खिलाफ विद्रोह कर दिया था। समाचार मिलते ही दिल्ली से सेना रवाना कर दी गई। राजा मानसिंह साथ था।

सेना की रवानगी से कुछ दिन पहले दिल्ली से घुडसवारो का एक जत्था गुजरात की दिशा मे भेजा जा चुका था। इस जत्थे का काम छोटे-बडे राज्यो मे अकबर का आतंक फैलाना था। मुगल झण्डो तथा नगाडो के साथ यह जत्था जिधर से गुजरता, बादशाह के गुलाम राजपूत तरह-तरह की सौगातें उसके साथ कर देते। जो थोडे बहुत छोटे राज्य अकबर के हमलो से अभी तक बचे हुए थे, वे इस निहत्थे जत्थे से ही इतना घबरा गए कि उन्होने अपने-आप मुगलो की अधीनता स्वीकार कर ली।

राणा प्रताप के जासूस सारे समाचार उन्हे पहुचाते रहते। भारतीय राजपूतो के इस डरपोकपन पर राणा को गुस्सा भी आता और दया भी आती।

जत्था मेवाड के पास पहुचा तो सीमा पर ही रोक लिया गया। तीर कमानधारी अधनगे भीलो ने उसे चारो ओर से घेर लिया। भीलो के मुखिया ने गरजकर पूछा, "कौन है आप लोग?"

"इसे नही देखते?" एक घुडसवार ने गर्व से मुगल झण्डे की ओर इशारा कर दिया।

"किसका झण्डा है यह?"

घुडसवार हसा, "हमने पहली बार ऐसा इन्सान देखा जो बादशाह-सलामत अकबर का झण्डा नही पहचानता।"

"आप लोग क्यो आए हैं?"

"बादशाह की सेना गुजरात की ओर कूच कर रही है। हम सेना के आगे-आगे चल रहे है।"

"आप शौक से अपना काम पूरा करिए, लेकिन यह मेवाड की सीमा है, आप इसमे नही घुस सकते। मेवाड स्वतन्त्र राज्य है।"

जत्थे के लिए इस तरह का जवाब मिलना बिल्कुल नई बात

थी। अब तक किसी भी राज्य मे प्रवेश करने से नही रोका गया था।

"मेवाड आजाद है तो क्या हुआ ?" घुडसवार ने कहा, "हमारे बादशाह जब चाहे, इसे गुलाम बना सकते है। हट जाओ रास्ते से।"

भीलो ने खचाक से तीर खीच लिया। मुखिया की रगें तन उठी—"आपको मालूम होना चाहिए कि भील अपनी बात के पक्के होते हैं। आप सीमा मे नही जा सकते।"

जत्थे को अकबर ने आज्ञा दी थी कि वह बिना किसी बडे कारण झगडे म न पडे। घुडसवारो ने चारो ओर तने तीरो के नुकीले फन देखे।

"अच्छा, अभी तो हम जाते हैं लेकिन " एक घुडसवार ने कहना चाहा, लेकिन दूसरे ने उसे इशारे से रोक दिया।

नगाडे, शहनाई आदि साज एक ऊट पर थे जो अपनी बेडौल चाल से जत्थे के बीच म चल रहा था।

जत्था आखो से ओझल हो गया तो मुखिया ने एक भील को पास आने का सकेत किया, 'राणा प्रताप का इसकी सूचना दी जाए!"

भील तुरन्त पहाडी ढलान पर दौड चला।

५ अब देर नही

राजा मानसिंह का दूत उदयपुर के दरबार मे पेश किया गया। वह अदब के साथ राणा प्रताप के सामने झुका और बोला, "शहशाह अकबर क सेनापति मानसिंह गुजरात के साम त को

हराकर दिल्ली लौट रहे हैं । दो दिनो के बाद वह मेवाड के पास से गुजरेंगे। उनकी ख्वाहिश है कि आपसे मुलाकात करें।"

प्रताप मुस्कराए, "वह मुझसे क्यो मिलना चाहते हैं ?"

"यह मैं कैसे कह सकता हू, महाराज ?" दूत फिर झुका।

"अपने सेनापति से कहो कि राणा प्रताप को उनसे मिलकर बडी खुशी होगी !" प्रताप ने गम्भीरता से कहा। दूत विदा हुआ।

अरावली पवन की खूबसूरत तराई मे, एक नदी के किनार मेवाड का भव्य तम्बू बनाया जाने लगा। आसपास की जगली झाडिया काटकर साफ कर दी गई और सुगधित फूलो के गमले सजा दिए गए। तम्बू मे रेशमी कपडो की दीवारें खीचकर चार बडे-बडे कमरे बनाए गए।

एक कमरे मे मानसिंह के लिए उपहारो का सग्रह किया गया। सोने-चादी के कलात्मक बर्तन, चादी के तारो से गुथे गजरे तथा कासे का ढला मेवाड का राजचिह्न उपहारो मे प्रमुख थे। नाटे कद का लेकिन भरे हुए पुटठो वाला तथा बहुत तेज दौडने वाला एक घोडा भी मानसिंह को देने के लिए जरी की कामदार जीन तथा सुनहरे गहनो से सजाया जा रहा था।

दूसरा कमरा मेवाड के सगीतकारो के लिए था। राणा प्रताप ने इस कमरे मे आकर एक सेवक से कहा, "सभी सगीतकार मुगल वेश-भूषा मे आएगे, याद है न ?"

"हा, महाराज"

"नर्तकी भी उसी वेश-भूषा मे होनी चाहिए !"

"आपके आदेशो का पालन हो रहा है, अन्नदाता ?"

राणा प्रताप तीसरे कमरे मे पहुचे। यही मानसिंह के माने का इन्तजाम हो रहा था। पलग पर रेशमी चादर बिछी थी जिस पर कसीदाकारी से हिरन के शिकार का दृश्य अकित था। एक

सेविका शय्या पर इत्र का छिडकाव कर रही थी। पास ही एक खूबसूरत चौकी पर शराब पीने के प्याले रखे गए थे। कमरे के प्रवेशद्वार पर फूलो के मोटे मोटे हार लटकाकर पर्दे की रचना की गई थी। सारी व्यवस्था देख-भालकर राणा प्रताप चौथे कमरे मे पहुचे, जो सबसे बडा था।

यहा उनका बडा बेटा अमरसिह उपस्थित था। पिता को देखकर उसने सादर अभिवादन किया। राणा प्रताप मुस्कराए, बोले, "मानसिह को अच्छी तरह मालूम हो जाना चाहिए कि मेवाड के राजपूत उससे कितनी घृणा करते हैं।"

"आप चिन्ता न करें, ऐसा ही होगा।"

यह कमरा नृत्य आदि के बाद मानसिह के सम्मान मे दिए जाने वाले भोज के लिए सजाया जा रहा था। बीच मे एक बहुत लम्बी ऊची-सी चौकी थी, जिसके दोनो ओर सुन्दर आसनो की कतार लगी थी।

भोर होते ही तम्बू मे से शहनाई के मधुर स्वर फूटने लगे। वातावरण शान्त था। आकाश का लाल रग शहनाई की मीठी तान से जसे और लाल हो उठा हो। थोडी देर बाद तराई के वृक्षो पर चिडियो का कलरव गूजने लगा जो बडा भला लग रहा था। सुबह की कच्ची हवा मे जगल की सोधी सोधी खुशबू मन को प्रसन्न कर रही थी।

मानसिह की पालकी तम्बू की ओर बढ रही थी। पालकी को आठ कहार उठाए हुए थे। उनकी मजबूत बाहो की ठोस मछलिया चमचमा रही थी। पालकी के आगे आगे तीन शानदार घोडे सधी हुई चाल से चल रहे थे। उन पर सवार मुगल सनिको ने छाती के सामने एक एक नगी तलवार तान रखी थी।

तीनो घोडो के आगे एक ऊट चल रहा था। उसकी पीठ पर नगाडे, शहनाई आदि साज थे। उन्हें बजाने वाले बडी शान से



आसपास देख रहे थे।

ऊट के आगे एक काबुली घोडा चल रहा था। उस पर बैठे घुडसवार ने बडे रौब से मानसिंह का झण्डा तान रखा था।

काबुली घोडे के आगे एक और काबुली घोडा था जो पूरे काफिले मे सबसे सुदर था। उसके सवार ने बादशाह अकबर का झण्डा धारण कर रखा था। यह घोडा सनिक चाल न चलकर दाए बाए डोलता हुआ बडी मस्ती के साथ चल रहा था।

मानसिंह की पालकी मे हल्के धचके लग रहे थे। पर्दा हटाकर वह अरावली पवन का सौंदय निहार रहा था। पीछे पीछे चार घोडो का जत्था चल रहा था। घोडा की पीठ पर कीमती सौगात लदी थीं, जिन्हे मानसिंह राणा प्रताप के लिए गुजरात से लाया था। इस जत्थे के पीछे सुरक्षा के लिए कुछ सनिक चल रहे थे।

दूर से तम्बू दिखाई पडा तो मानसिंह मुस्कराया। उसकी सवारी तम्बू के लोगो ने देख ली थी और मेवाड के सामन्तो व सेवक सेविकाओ मे हलचल मच गई थी।

अगवानी के लिए तीन घोडे तम्बू से रवाना हुए। करीब आने पर मानसिंह ने देखा कि बीच के घोड पर अमरसिंह सवार था। दोनो ओर के घोडो पर मेवाड के ध्वज फहरा रहे थे।

राणा प्रताप क्यो नही आए अगवानी के लिए ? मानसिंह के मन मे प्रश्न उठा, लेकिन फिर उसने सोचा किसी जरूरी काम से तम्बू मे रुक गए होगे।

"मैं अपने पिता और अपनी जन्मभूमि स्वतन्त्र मेवाड की ओर से आपका स्वागत करता हू।" अमरसिंह ने कहा।

इस वाक्य मे 'स्वतन्त्र मेवाड' ये दो शब्द इस तरह कहे गए थे कि मानसिंह को कुछ खटका-सा हुआ। उसने अमरसिंह की ओर घूमने की चेष्टा की, लेकिन अमरसिंह पवत की ओर देखने लगा था।

सब तम्बू की ओर बढने लगे।

स्नान आदि से निबट चुकने के बाद भी जब राणा प्रताप दिखाई न पडे तो मानसिंह का आश्चय बढा। उसने अमरसिंह से पूछा, "राणा नही आए ?"

"आते ही होगे, महाराज !" अमरसिंह मुस्कराया, "परसों शिकार खेलते समय हमारे एक सामन्त को शेर ने घायल कर दिया था। पिताजी उसी की खैर खबर पूछने गए हैं। अब तक उन्हे लौटा आना चाहिए था, लेकिन लगता है, सामन्त की दशा गम्भीर हो गई है।"

मानसिंह को सुनकर अच्छा न लगा। राणा प्रताप ने एक मामूली से सामन्त को शहशाह अकबर के सेनापति से ज्यादा महत्त्व दिया था ! यह अपमान ही तो था—उस मानसिंह का अपमान, जिसके एक इशारे से मुगल-सेना भूखे शेर की तरह दहाडकर मेवाड पर टूट सकती थी।

"आप हमारे सगीत-कक्ष मे पधारें !" अमरसिंह ने कहा।

मानसिंह का ध्यान टूटा, "हा हा, चलिए !"

पर्दा हटाकर दोनो भीतर पहुचे। नर्तकी ने झुककर सलाम किया। सगीतकारों ने भी अपनी अपनी जगह से उठकर सलाम किया।

नृत्य शुरू हुआ तो मानसिंह से न रहा गया, "कुवर अमरसिंह, मुगल नृत्य व मुगल सगीत तो मैं अक्सर देखता और सुनता हू। मैंने सोचा था कि बहुत दिनो बाद यहा राजपूत-शैली का नृत्य देखने को मिलेगा।"

अमरसिंह ने तुरन्त व्यग्य-बाण छोडा, "मैं अपनी इस भूल के लिए क्षमा चाहता हू, लेकिन मैंने और पिताजी ने सोचा कि शायद बादशाह के साथ रहने के कारण अब आपको राजपूत-शैली पसन्द न आती हो।"

मानसिंह कटा , झेंप मिटाने के लिए तुरंत बोला, "नहीं तो ऐसी कोई बात नही !"

आप अगली बार आएगे तो राजपूत-शैली के नृत्य का ही आयोजन किया जाएगा।"

जब नर्तकी ने सोने के कटोरे मे मदिरा ढालकर सामने रख दी, मानसिंह ने अचरज से अमरसिंह की ओर देखा, "कुवरजी, आप पीते हैं ?"

अमरसिंह हसा, "मेरे लिए नही, आपके लिए मगाई गई है। मुगल दरबार मे जाने के बाद तो आप पीने लगे होगे !"

"मुझे कहना ही पडेगा कि आप लोगो को मेरे बारे मे कई गलतफहमिया हैं।" मानसिंह बुरा मान गया, लेकिन अमरसिंह ने परवाह न की और कहा, "शायद ऐसा ही हो।"

"शायद नही, ऐसा ही है।"

अमरसिंह चुप रहा।

नृत्य समाप्त हो गया। उपहारों का लेन देन समाप्त हो गया। मानसिंह थोडा आराम कर चुके तो दोहपर के भोजन की तैयारिया होने लगी। लेकिन अभी तक वहा राणा का आगमन नही हुआ। मानसिंह विकल होने लगा।

सेविका उपस्थित हुई, "महाराज भोजन तैयार है।"

सबने अपने अपने आसन ग्रहण कर लिए।

"कुवर अमरसिंह, ' मानसिंह की विकलता सीमा पार कर चुकी थी, "राणा अभी तक नही आए ?'

'आप भोजन शुरू करिए। वह आते ही होगे।" अमरसिंह बोला। उसी समय माना झाला ने प्रवेश किया। अमरसिंह उठ खडा हुआ, "आइए आइए, अब तक कहा थे आप ?"

'राणाजी के साथ था। ' कहकर माना झाला ने मानसिंह की ओर देखा। यह उनकी पहली मुलाकात थी। अमरसिंह ने परि-

चय कराया। अभिवादन और मुस्कराहटो का आदान-प्रदान हुआ।

"शुरू करिए।" माना झाला ने कहा।

"आप राणा प्रताप के पास से आ रहे हैं न?" मानसिंह का प्रश्न था।

"हा, मान्यवर!"

"वह कब तक यहा पहुचेंगे? क्यों न उनकी प्रतीक्षा की जाय?"

माना झाला ने गमगीन स्वर मे कहा, "क्षमा करें तो एक अशुभ सूचना दू।"

सबने आशका से माना झाला की ओर देखा।

"राणा ने कहलाया है कि वह इस भोज मे सम्मिलित न हो सकेंगे।"

"क्यो?" मानसिंह चौंका।

"उनके पेट मे दर्द है।"

मानसिंह यह सुनकर उठ खडा हुआ। उसकी आखें क्रोध से जलने लगी। उसने अन्नदेवता का आचमन किया और बुदबुदाया, "राणा के पेट मे दद है या नही, मैं सब समझ गया। आपकी आवभगत के लिए धन्यवाद! मैं भोजन नही कर सकता।"

मानसिंह के सारे अनुचर भी उठ खडे हुए।

"सुनिए सुनिए तो सही" अमरसिंह लपका, लेकिन तब तक मानसिंह कक्ष से बाहर निकल चुका था।

पास ही लगाए गए मुगल तम्बू मे पहुचकर वह वापसी की तैयारिया करने लगा। वह बार बार क्रोध से होठ भीच रहा था। इतना बेवकूफ वह नहीं था कि राणा प्रताप का बहाना न समझता। राणा के पेट मे दद तो क्या होना था, हा वह ऐसे राजपूत के साथ भोजन करना नहीं चाहते थे, जिसने अपनी बहन

जोधाबाई अकबर से ब्याह दी थी। मम पर यह चोट मानसिंह के लिए असह्य थी।

कुछ सामन्तो के साथ अमरसिंह और माना झाला ने तम्बू मे प्रवेश किया। उन्हे देखते ही मानसिंह बोला, "राणा प्रताप से कहिएगा कि उनके पेट दर्द का इलाज शीघ्र ही किया जाएगा।'

माना झाला ने स्पष्ट कह दिया, "जब आप आए तो हमारे दो परम पूज्य भाइयो कुवर जगमल और शक्तिसिह को भी लाना न भूलें। राणा उन्हें प्राय याद किया करते है।"

वार करने से अमरसिंह भी कैसे चूकता ? बोला, "और हो सके तो अपने जीजाजी शहशाह अकबर का भी साथ लाइएगा।"

तना चेहरा और जलती कनपटी लिए मानसिंह पालकी मे जा बैठा, बोला "कुवर अमरसिंह ! इलाज बहुत महगा पडेगा।"

पतित राजपूत की यह हिम्मत ? अमरसिंह हसकर बोला, "इलाज करने पैदल मत आइएगा, हाथी पर आइएगा। यह जानवर काफी ऊचा और समझदार होता है।"

"चलो !" होठ काटकर मानसिंह ने आज्ञा दी। कहार पालकी लेकर चल पडे।

मानसिंह की रवानगी के बाद जहा-जहा उसके पर पडे थे, वहा-वहा गगाजल छिडका गया ताकि भूमि पवित्र हो जाए। सोने-चादी के जिन बर्तनों को उसने छूआ था, उन्ह झरने मे फेंक दिया गया और तम्बू को आग लगाकर नष्ट कर दिया गया।

मुगल जत्ये की वापसी के बाद शहशाह के प्रिय सेनापति का यह अपमान ! मेवाड पर हमला होने म अब देर नहीं थी।

६. लुढकती चट्टानें

हवा का तेज झोका आया और चेतक द्वारा उडाई गई पीली धूल का गुबार दूर दूर तक छा गया। पीली धूल ! मेवाड की— आजाद मेवाड की पीली धूल ! हल्दी घाटी की पीली धूल !

'कुछ ही दिनो मे तू खून से नहाकर लाल हो जाएगी !' राणा प्रताप हल्दी घाटी से गुजरते समय सोच रहे थे। चेतक के पैरो के नीचे से जमीन यो फिसल रही थी मानो उनकी भारी नुकीली टापो से डरकर भाग रही हो।

राणा के साथ भीलो का मुखिया तथा कुवर अमरसिंह भी थे जो काफी पिछड गए थे।

"रुको बेटा, रुको मेरे चेतक!" राणा बोले। चेतक रुक गया। घाटी के दोनो ओर उठी पर्वत शिखाओ की हरियाली करवटें शान्त थी।

कुछ ही देर मे मुखिया और अमरसिंह आ पहुचे। "मुगल-सेनाओ से टक्कर लेने के लिए इससे वढिया जगह और कोई नही हो सकती।" अमरसिंह ने कहा।

मुखिया के चेहरे पर मुस्कान तैरी, "पहाडो के ऊपर से जब भीलो के बाण बरसेंगे तो मुगलो को छटी का दूध याद आएगा।"

चक्करदार पगडण्डिया पार करते हुए ये तीनो एक चोटी की ओर बढने लगे। यहा कुछ भील पहले से उनका इन्तजार कर रहे थे। राणा प्रताप ने चोटी पर खडे होकर खाई मे झांका, गहरी शान्त और सूनी खाई ! बडे बडे पेड ऊपर से खिलौने जसे मालूम पड रहे थे।

"तीर के साथ-साथ भील भारी-भारी चट्टानें भी बरसाएगे जो दुश्मनो को कुचल देंगी।" मुखिया ने अपने भीलो की ओर

जोधाबाई अकबर से ब्याह दी थी। मम पर यह चोट मानसिंह के लिए असह्य थी।

कुछ सामन्तो के साथ अमरसिंह और माना झाला ने तम्बू मे प्रवेश किया। उन्हे देखते ही मानसिंह बोला, "राणा प्रताप से कहिएगा कि उनके पेट दर्द का इलाज शीघ्र ही किया जाएगा।'

माना झाला ने स्पष्ट कह दिया, "जब आप आए तो हमारे दो परम पूज्य भाइयो कुवर जगमल और शक्तिसिंह को भी लाना न भूलें। राणा उन्हें प्राय याद किया करते है।"

वार करने से अमरसिंह भी कसे चूकता ? बोला, "और हो सके तो अपने जीजाजी शहशाह अकबर को भी साथ लाइएगा।"

तना चेहरा और जलती कनपटी लिए मानसिंह पालकी मे जा बैठा, बोला "कुवर अमरसिंह ! इलाज बहुत महगा पडेगा।"

पतित राजपूत की यह हिम्मत ? अमरसिंह हसकर बोला, "इलाज करने पैदल मत आइएगा, हाथी पर आइएगा। यह जानवर काफी ऊचा और समझदार होता है।"

"चलो !" होठ काटकर मानसिंह ने आज्ञा दी। कहार पालकी लेकर चल पडे।

मानसिंह की रवानगी के बाद जहा-जहा उसके पैर पडे थे, वहा-वहा गगाजल छिडका गया ताकि भूमि पवित्र हो जाए। सोने-चादी के जिन बरतनो को उसने छुआ था, उन्हे झरने मे फेंक दिया गया और तम्बू को आग लगाकर नष्ट कर दिया गया।

मुगल जत्थे की वापसी के बाद शहशाह के प्रिय सेनापति का यह अपमान ! मेवाड पर हमला होने मे अब देर नही थी।

"वे पालतू बना लिए गए हैं। यदि असुविधा न हो तो उन्हें कल शाम आपकी सेवा मे भेज दिया जाए ?"

"दूसरे हाथी तो शाम को भेजिए, लेकिन जो सबसे ऊंचा व कद्दावर हो, उसे सुबह ही भेज दीजिए।"

"क्यो ?"

"आपको तो मालूम ही होगा कि हम चेतक को हाथी पर छलाग लगाने की शिक्षा दे रहे हैं।"

"हा, मैं जानता हू। हल्दी घाटी की लडाई मे चेतक मानसिंह के हाथी पर उछलेगा।"

"मेवाड का सबसे ऊचा गजराज कुछ महीनो पहले ही बूढा होकर मर चुका है। छोटे हाथियो पर छलाग लगाने का अभ्यास चेतक ने पूरा कर लिया है,पर बडे "

"ठीक है, मैं सेवको के साथ सबसे बडा हाथी सुबह ही रवाना कर दूगा।"

सुबह राणा प्रताप ने एक की बजाय दो हाथी राजमहल के पिछवाडे के मैदान की ओर बढते देखे। दोनो ही एक-जैसे विराट् शरीर और समान उचाई के थे। उनके गले मे बधी घण्टियो की टन-टन बहुत मीठी लग रही थी।

एक हाथी पर तीन भील बैठे हुए थे। दो भील हाथी की पीठ पर थे, एक गर्दन पर सवार होकर अकुश चला रहा था। इस हाथी की पीठ नगी थी, जबकि दूसरे हाथी की पीठ पर रेशमी झालर बिछी थी। उसके महावत ने भीलो की तरह केवल धोती नही पहनी थी, बल्कि उसने पीली पगडी और सफेद कुर्ता धारण कर रखा था। किसका है यह दूसरा हाथी ? राणा उत्सुकता से चेतक पर सवार होकर मैदान की ओर बढ़े।

दोनो हाथी रुक गए। सूड उठाकर उन्होने सलामी दी। अजगर-सी लपलपाती सूड ऊपर उठी तो नीचे के लम्बे झकझक

देखा, "राणा को एक प्रयोग दिखाया जाए।"

भीलो ने नत-मस्तक होकर मुखिया की आज्ञा स्वीकार की और दाहिनी ओर बढे। उधर पहाड की कगार पर एक बहुत बडी चट्टान रखी थी, जो बडी मेहनत से काटकर और धीरे-धीरे खिसकाकर कगार पर जमाई गई थी। भीलो ने अपने भालो की मूठें चट्टान के नीचे डाल दी और भालो को कन्धो पर टिकाकर वे जोर से हुमचे। चट्टान हिली—विराट्काय, काली चट्टान!

"जोर लगाओ!" भीलो मे से एक ने नारा लगाया।

"होशियार!" मुखिया ने उत्साह दिलाया।

और चट्टान खौफनाक शोर मचाती, सामने पडती हर चीज को पीसती, उखाडती, अपने पीछे धूल की मोटी रेखा उडाती पाताल जैसी खाई की ओर लुढक चली। दूर होने के साथ साथ उसका आकार भी छोटा हो रहा था। उसके लुढकने का शोर क्रमश धीमा पडा और वह घाटी की सपाट जमीन पर जाकर धस-सी गई।

"बताइए, एक ही चट्टान सैकडो की जान लेगी या नही?" मुखिया सतोष से हसा।

"क्यो नही!" राणा प्रताप की आखें कौंधी। उन्होने श्रद्धा से आकाश की ओर देखा, "भगवान एकलिंग ने हमे अरावली पवत और हल्दी घाटी का वरदान दिया है। इस वरदान का पूरा उपयोग करना हमारी आवश्यकता ही नही, कर्तव्य भी है।"

अमरसिंह बोला, मैं पहाडियो मे चक्कर लगाकर चट्टान काटने वाले भीलो को उत्साह दिलाता हू।" घोडे पर चढ उसने एड लगाई। कुछ ही देर मे वह आखो से ओझल हो गया।

"महाराज!" मुखिया ने राणा की ओर देखा, "आपने सेना के लिए कुछ जगली हाथी पकडवाए थे?"

"हा, उनका क्या हुआ?"

"वे पालतू बना लिए गए हैं। यदि असुविधा न हो तो उन्हें कल शाम आपकी सेवा में भेज दिया जाए ?"

"दूसरे हाथी तो शाम को भेजिए, लेकिन जो सबसे ऊंचा व कद्दावर हो, उसे सुबह ही भेज दीजिए।"

"क्यों ?"

"आपको तो मालूम ही होगा कि हम चेतक को हाथी पर छलांग लगाने की शिक्षा दे रहे हैं।"

"हां, मैं जानता हूं। हल्दी घाटी की लड़ाई में चेतक मानसिंह के हाथी पर उछलेगा।"

"मेवाड़ का सबसे ऊंचा गजराज कुछ महीनों पहले ही बूढ़ा होकर मर चुका है। छोटे हाथियों पर छलांग लगाने का अभ्यास चेतक ने पूरा कर लिया है,पर बड़े "

"ठीक है, मैं सेवकों के साथ सबसे बड़ा हाथी सुबह ही रवाना कर दूंगा।"

सुबह राणा प्रताप ने एक की बजाय दो हाथी राजमहल के पिछवाड़े के मैदान की ओर बढ़ते देखे। दोनों ही एक-जैसे विराट् शरीर और समान ऊंचाई के थे। उनके गले में बंधी घण्टियों की टन टन बहुत मीठी लग रही थी।

एक हाथी पर तीन भील बैठे हुए थे। दो भील हाथी की पीठ पर थे, एक गर्दन पर सवार होकर अंकुश चला रहा था। इस हाथी की पीठ नंगी थी, जबकि दूसरे हाथी की पीठ पर रेशमी झालर बिछी थी। उसके महावत ने भीलों की तरह केवल धोती नहीं पहनी थी, बल्कि उसने पीली पगड़ी और सफेद कुर्ता धारण कर रखा था। किसका है यह दूसरा हाथी ? राणा उत्सुकता से चेतक पर सवार होकर मैदान की ओर बढ़े।

दोनों हाथी रुक गए। सूंड उठाकर उन्होंने सलामी दी। अजगर-सी लपलपाती सूंड ऊपर उठी तो नीचे के लम्बे झकझक

सफेद दांत सुबह की धूप में चमक उठे।

भीलों ने हाथी से उतरकर राणा को प्रणाम किया और कहा, "इसे हमारे मुखिया ने भेजा है।"

राणा ने मुस्कराकर दोनों को इनाम दिया और दूसरे हाथी के महावत की ओर देखा जो अभिवादन करके अदब के साथ एक ओर खड़ा था।

"तुम कहां से आए हो, भाई?" राणा ने पूछा।

"ग्वालियर से अन्नदाता!" जवाब मिला, "हमारे राजा की ओर से यह हाथी स्वीकार करिए। इसका नाम रामप्रसाद है— झुको बेटा, झुको, झुको महाराज को प्रणाम करो।" महावत रामप्रसाद की ओर बढ़ा।

अगले पैर मोड़कर रामप्रसाद ने जमीन पर माथा टेक दिया। झुकी हुई विराट्काय जीवित शिला! रामप्रसाद ने चिंघाड़कर जैसे उल्लास प्रकट किया। महावत हंसा, "महाराज, जब तक आप इसके मस्तक पर हाथ न फेरेंगे, यह उठेगा नहीं।"

"अच्छा?" राणा प्रताप चेतक से उतरे। करीब जाकर उन्होंने रामप्रसाद का मस्तक छुआ। रामप्रसाद की छोटी-छोटी आंखों में कृतज्ञता के भाव तैरे। धीमी हुंकार के साथ वह उठ खड़ा हुआ।

"आपके लिए ग्वालियर-नरेश का एक सन्देश है।" महावत ने एक पत्र राणा की ओर बढ़ा दिया जो चन्दन की चिकनी, गोल छड़ के चारों ओर लिपटा हुआ था। उसे खोलकर राणा ने पढ़ना शुरू किया, 'आयुष्मान उदयपुर-नरेश वीर राणा प्रताप की सेवा में ग्वालियर नरेश राजाराम शाह की ओर से 'रामप्रसाद' नामक हाथी प्रेषित किया जा रहा है। आप मुगलों से युद्ध करने के लिए हल्दी घाटी में तैयारियां कर रहे हैं, ऐसे समाचार हमें मिले हैं। हमें बड़ी प्रसन्नता है कि आपका खून उन राजपूतों की तरह सफेद

नहीं है जो यवनो की सेवा करने मे ही अपना गौरव समझते हैं। ग्वालियर आपके इस साहस को मान की दृष्टि से देखता है और चाहता है कि आप मुगलो के विरुद्ध युद्ध करने मे इसकी सेनाओ का पूरा उपयोग करें। रामप्रसाद के साथ भेजा गया महावत ग्वालियर का दूत भी है, जो इसका प्रतीक है कि यहा का हर आदमी दो आदमियो के बराबर है। हमे विश्वास है कि आप ग्वालियर का सेवा का अवसर प्रदान करेंगे। सदैव आपका, राजाराम शाह।'

कुछ दिन बाद ही ग्वालियर की सेना ने हथियारो से लैस होकर और जोश के गम तालाब मे नहाकर हल्दी घाटी की ओर कूच कर दिया। सादडी से माना झाला की टुकडिया भी आपहुची थी। अरावली के भील सभी सैनिको को हल्दी घाटी मे घुमा रहे थे ताकि वे चप्प चप्पे से परिचित हो जाए।

युद्ध की तैयारियो के समाचार आग की तरह चारो ओर फैल गए। राणा प्रताप के गुप्तचरो का जाल दूर-दूर तक बिछ चुका था।

राजस्थान के बहुत कम राजपूत राणा प्रताप की सहायता करने के लिए आगे आए, फिर भी राणा बिल्कुल निराश नही हुए। उन्होने पहले से ही सहायता की आशा नही रखी थी। वे अच्छी तरह समझते थे कि जिन राजपूतो ने मुगलो की सेवा स्वीकार की है, वे नही चाहते कि कोई भी राजपूत स्वतन्त्र रहे, क्योंकि ऐसे गर्वीले राजपूतो के सामने वे अपने को ओछा अनुभव करते है।

खूनी दिन करीब आ रहे थे

झूमरे फल-फूल खाती, झरनो का पानी पीती और कभी कोई गाय, बकरी या भैंस नजर आ जाती तो दूध दुहकर बटवारा कर लेती।

सुबह-शाम सनिक कवायद करते, कुश्तिया लडते, दौड लगाते, ज्यादा से ज्यादा सास भरने और रोकने का अभ्यास करते ताकि युद्ध मे जल्दी हाफ न जाए। स्त्रियो और बच्चो को सुरक्षित कन्दराओ मे पहुचा दिया गया।

"मुगल-सेनाए मण्डलगढ मे रुक गई हैं। मानसिंह और सलीम कुछ सामन्तो का इन्तजार कर रहे हैं। उनके आ मिलने पर सब एक-साथ रवाना होगे।" गुप्तचर समाचार लाया था।

राणा ने पूछा, "उनके पास लगभग कितने सैनिक होगे ?"

"चालीस हजार के आसपास।"

"और हमारे पास हैं बाईस हजार। हमारा हर सैनिक उनके दो सैनिको के बराबर है। इस हिसाब से हमारी सैनिक सख्या चवालीस हजार हुई।"

छिपी तैयारियो मे मई भी बीत गया। अब मुगल सेना हल्दी घाटी की ओर बढने लगी। घाटी के मुह के पास मोजरा नामक किला था जिस पर उसने कब्जा कर लिया। राजपूतो ने इसका विरोध नही किया, क्योकि वे तो चाहते ही थे कि मानसिंह घाटी मे प्रवेश करे।

लेकिन मानसिंह भी मजा हुआ योद्धा था। वह अच्छी तरह जानता था कि घाटी मे प्रवेश करना कितना खतरनाक है। उसने मोजरा मे ही स्थायी पडाव डाल दिया।

लेकिन ज्यो-ज्यो दिन बीत रहे थे, मुगल सेना की रसद कम होती जा रही थी। मेवाड की उजडी धरती मे तो खाने पीने लायक कुछ था ही नही। मुगल-सैनिक जगलो की ओर बढने की हिम्मत नही कर सकते थे। उन जगलो के रसीले फल और मधुर झरने उन्हे ललचाते, चिढाते, लेकिन ज्योही वे उसकी ओर कदम

७. दोपहर की जीत

कुल देवना भगवान एकलिग महादेव की पूजा करके राणा प्रनाप मदिर से बाहर निकले तो चेतक के पास एक दूसरा घोडा दिखाई पडा। उसका सवार लगाम पकडकर पास ही खडा था। राणा प्रताप ने उसे पहचाना, वह मेवाड का गुप्तचर था।

"मुगल-सेना अब कितनी दूर है?" राणा ने तुरत प्रश्न किया।

"यहा से लगभग १५० मील। राजा मानसिह के साथ "

"होश मे बात करो!" राणा ने टोक दिया, "राजा नही, गुलाम मानसिह।"

गुप्तचर कुछ झपकर बोला, "गुलाम मानसिह सेना के साथ है। शाहजादा सलीम भी साथ आ रहा है, अन्नदाता!"

"शक्तिसिह और जगमल?"

"शक्तिसिह सहायक सेनापति के पद पर नियुक्त है। जहा तक मुझे मालूम है, जगमल इस आक्रमण मे शामिल नही ह।"

"वह सरोही के दरबारी नाच गान मे डूबा होगा!" राणा कटुता से हसे, "अच्छा, अब तुम जाओ और जब मुगल सेना ५० मील दूर रह जाए तो मुझे तुरन्त सूचना दो। और देखो, अपनी सुरक्षा का पूरा ध्यान रखना।"

यह १५७६ का अप्रल मास था। गर्मियो की शुरुआत हो चुकी थी। पहाडी इलाका होने के कारण हल्दी घाटी मे उसका कोप नही था। जगल रसीले आमो से लद गए थे। मेवाड की जनता ज ली जीवन अपना चुकी थी। वह इन आमो का मजा लूटती,

झरने फल-फूल खाती, झरनो का पानी पीती और कभी कोई गाय, बकरी या भैंस नजर आ जाती तो दूध दुहकर बटवारा कर लेती।

सुबह-शाम सैनिक कवायद करते, कुश्तिया लडते, दौड लगाते, ज्यादा से ज्यादा सास भरने और रोकने का अभ्यास करते ताकि युद्ध मे जल्दी हाफ न जाए। स्त्रियो और बच्चों को सुरक्षित कन्दराओ मे पहुचा दिया गया।

"मुगल-सेनाए मण्डलगढ मे रुक गई हैं। मानसिंह और सलीम कुछ सामन्तो का इन्तजार कर रहे हैं। उनके आ मिलने पर सब एक-साथ रवाना होगे।" गुप्तचर समाचार लाया था।

राणा ने पूछा, "उनके पास लगभग कितने सैनिक होगे ?"

"चालीस हजार के आसपास।"

"और हमारे पास हैं बाईस हजार। हमारा हर सैनिक उनके दो सैनिको के बराबर है। इस हिसाब से हमारी सनिक सख्या चवालीस हजार हुई।"

छिपी तैयारियो मे मई भी बीत गया। अब मुगल सेना हल्दी घाटी की ओर बढने लगी। घाटी के मुह के पास मोजरा नामक किला था जिस पर उसने कब्जा कर लिया। राजपूतो ने इसका विरोध नही किया, क्योकि वे तो चाहते ही थे कि मानसिंह घाटी मे प्रवेश करे।

लेकिन मानसिंह भी मजा हुआ योद्धा था। वह अच्छी तरह जानता था कि घाटी मे प्रवेश करना कितना खतरनाक है। उसने मोजरा मे ही स्थायी पडाव डाल दिया।

लेकिन ज्यो-ज्यो दिन बीत रहे थे, मुगल सेना की रसद कम होती जा रही थी। मेवाड की उजडी धरती मे तो खाने पीने लायक कुछ था ही नही। मुगल-सैनिक जगलो की ओर बढने की हिम्मत नही कर सकते थे। उन जगलो के रसीले फल और मधुर झरने उन्हे ललचाते, चिढाते, लेकिन ज्योही वे उसकी ओर कदम

बढाते, भीलो के तीर उनकी छाती के आरपार उतर जाते।

मानसिंह और सलीम को शीघ्र ही परिस्थिति की गम्भीरता का पता चल गया। जरूरी था कि युद्ध जल्दी शुरू होकर जल्दी ही समाप्त हो जाए। राणा की सेनाए घाटी के उधर थी। उनसे टक्कर लेने के लिए घाटी मे प्रवेश करना पडता, जो मानसिंह नही चाहता था।

लेकिन कब तक इस तरह पडाव डालकर पडा रहा जाए?

उस दिन राणा के गुप्तचर दो बहुत महत्त्वपूर्ण समाचार लाए। एक—मानसिंह मोजरा से आगे बढकर ठीक हल्दी घाटी के मुह पर आ गया है। दो—वह बहुत कम सैनिको के साथ शिकार खेलने निकला है।

शिकार के शौकीन मानसिंह को पता नही था कि राणा की सेनाए काफी आगे बढ चुकी हैं। शिकार करता हुआ वह जहां तक आ गया था, वहा से राणा का शिविर दो चार मील ही दूर था।

कुछ सामन्तो ने राणा के सामने प्रस्ताव रखा, "अगर अचानक हमला कर दिया जाए तो मानसिंह की जान नही बच सकती।"

राणा विचार मे डूब गए।

"मानसिंह के मरने के बाद मुगल-सेना की ताकत आधी रह जाएगी।" सामन्त ने कहा।

"आपका कहना ठीक है," राणा बोले, "लेकिन सोचिए, शिकार के लिए निकले शत्रु पर अचानक हमला करना क्या धोखे की बात न होगी? धोखा कायर दिया करते हैं, वीर तो चुनौती देते है और लडते है।"

माना झाला और राजाराम शाह ने राणा का समर्थन किया। सामन्तो ने भूल स्वीकार कर ली।

"हमे अपनी सेनाए और आगे बढानी चाहिए। मुगलों को पता न चलने पाए।" राणा बोले।

सामन्तो के विदा होने के बाद राणा ने मानां झाला और राजाराम शाह की ओर देखा, "मानसिह हल्दी घाटी के मुह पर आ डटा है, लेकिन वह भीतर नही घुसेगा। ऐसा क्यो न किया जाए कि हम स्वय घाटी को पार करके उस पर हमला बोल दें ?"

"लेकिन तब पहाडो पर चट्टानें लुढकाने वाली योजना बेकार हो जाएगी।"

"नही होगी," राणा ने उत्तर दिया, "हमे आगे बढते देखकर मुगल-सेना कुछ दूर तक तो घाटी मे घुसेगी ही। तब उस पर चट्टानें लुढकाई जाएगी। साथ ही आधे से ज्यादा तीरदाज भील पहाडों के ऊपर ही ऊपर दुश्मनो की ओर बढ जाए। चट्टानो की कमी वे पूरी कर देंगे।"

मोर्चा जमाया जाने लगा। "पहला हमला मेरा दल करेगा।" राजाराम शाह ने कहा। उसे सेना का दाहिना हिस्सा सौंपा गया था। बाया हिस्सा माना झाला के नेतृत्व मे था। बीच के सबसे शक्तिशाली दल के नेता स्वय राणा प्रताप थे।

उधर मुगलो का मोर्चा भी लग चुका था। मानसिह और सलीम बीच मे थे। उनके आगे का, याने सबसे सामने का हिस्सा गाजीखान सभाल रहा था। रात को चुपके-चुपके मेवाड की सेना गाजीखान की ओर बढ चली।

हाथी रामप्रसाद इतनी सावधानी से जमीन पर पैर रखता था कि इतने विशाल शरीर के बावजूद लेशमात्र भी आवाज न होती। उसके मस्तक को लोहे के जाल ने ढक रखा था ताकि वह भाले, तीर आदि के वार से बच सके। पीठ के दोनो करवटो पर भी लोहे के जाल लटक रहे थे। अधेरे मे उसके विशाल दातो की सफेदी गायब हो गई थी।

उस पर सवार राजाराम शाह बहुत गम्भीर था। रामप्रसाद के दोनो ओर राजाराम के पुत्र तथा साम तो के चपल घोडे चल रहे थे। पीछे नगी तलवारें लिए घुडसवारो की कनारें थी। आधी रात बीत गई। आकाश मे छठवी का पतला चाद चुपचाप सो रहा था। हवा शान्त थी, मानो सहम गई हो।

सुबह की घुधली रोशनी पूरब से फूटी तो हल्दी घाटी लगभग पार की जा चुकी थी। कुछ देर और चलने के बाद जैसे ही कच्ची धूप ने दर्शन दिए, युद्ध की तुरही बजा दी गई।

दौड पडे मेवाडी घोडे—पीली धूल उडाते हुए 'जय एकलिंग' के घोष से आकाश गूज उठा।

गाजीखान के सनिक भी असावधान नही थे। उन्होने तलवारें खीच ली और 'अल्लाहो अकबर' के नारो के साथ राजपूतो पर टूट पडे। मार-काट, शस्त्रो के टकराने, घायल सैनिको की चीखो आदि से हवा थर्राने लगी।

रामप्रसाद जोर-जोर से चिंघाडता हुआ सूड फटकार रहा था। सूड का थपेडा पडने से कभी-कभी मुगल-सनिक अधर उछल जाते। कई सैनिक तो रामप्रसाद के पैरो के नीचे आकर धूल मे मिल गए। दुश्मन को राजाराम शाह के तीरो ने हतप्रभ कर दिया।

"वह रहा गाजीखान!" राजाराम ने तलवार उठाकर नारा लगाया, "बचे न पाए!"

गाजीखान का मुगलिया झण्डा दूर से दिखाई पड रहा था। ज्योही रामप्रसाद उधर बढा, मुगल सनिको ने उसे रोकने के लिए भाले उछालने शुरू किए, लेकिन मेवाड के वीरो के सामने उनकी एक न चली। कई सैनिक मौत के घाट उतर गए, कई घायल होकर भागने लगे।

एक को भागते देखकर दूसरा भी भागा, दूसरे को देखकर



तीसरा और यो कुछ मिनटो मे गाजीखान के पूरे दस्ते का साहस छूट गया। गाजीखान ने उन्हे रोकने की कोशिश की लेकिन हल्ले मे उसकी आवाज कौन सुनता था। राजाराम का इशारा पाते ही नगाडे घमघमा उठे जिससे मुगल सैनिको मे भय का सचार हो गया। अब तो वे किसी भी तरह नही ठहर सकते थे।

जिस तरह जगली झाडिया हवा का रास्ता नही रोक सकती, उसी तरह अब रामप्रसाद का रास्ता भागते सैनिक नही रोक सकते थे। सूड फटकारता और चिघाडता हुआ वह गाजीखान की ओर बढा। राजाराम के एक बेटे ने झन्न से गाजीखान की तलवार पर तलवार मारी।

इधर भागते सनिको पर पहाडियो के ऊपर से भीलो के तीर छूटते और हवा को साय-साय काटते हुए मुगलो की छाती में घस जाते। घायल घोडे भागते-भागते मौत की आखिरी हिनहिनाहट के साथ जमीन पर इस तरह लुढक जाते मानो अचानक उनके चारो पैरो की हड्डिया तोड दी गई हो।

गाजीखान के मुह से चीख निकल गई। राजाराम के बेटे की कुशल तलवारबाजी से उसके छक्के छूट गए। अचानक उसकी ढाल नीचे गिर पडी और वार बचाते-बचाते भी बाह का मास गहराई तक कट गया। घोडे को एड लगाकर किसी तरह वह भाग निकला।

ये सैनिक जब तक मानसिंह की टुकडी मे शामिल होते, राणा प्रताप के सैनिक आगे आ गए। थोडे-बहुत बिखरे व्यूह को तेजी से ठीक कर लिया गया। घावो पर पट्टिया बाधने वाला दल फुर्ती से काम करने लगा।

सूरज अब माथे पर चमक रहा था। जमीन पर जगह-जगह पडे खून के धब्बो ने अपनी गध से राजपूतो को और उत्तेजित कर दिया।

राणा का चेतक दौड पडा। ठीक पीछे माना झाला का घोडा था। सामने से 'जय मानसिंह !' के नारे आए। दुश्मनो की बहुत बडी टोली दौडी आ रही थी। राणा प्रताप ने आखें सिकोडी—यह राजपूतो की टोली थी। उनकी पोशाकें भी ठीक वैसी थी, जैसी मेवाड के राजपूतो की थीं।

राणा ने माना झाला से कहा, "यह धोखेबाजी है। हमे पता ही न चलेगा, कौन हमारे राजपूत हैं, कौन दुश्मनो के।"

समस्या गम्भीर थी और हल सोचने का समय बहुत कम। माना झाला ने दोनो ओर की पहाडियो की ओर आखें उठाईं। लुढकने का इन्तजार करती विराट् चट्टानें

हाथ हिलाकर विशेष इशारा किया गया। चट्टानो की ओट से झाकते भीलो के बेताब हाथी ने जोर लगाया और

घडडड !

एक चट्टान लुढकी—धूल उडाती फिर दूसरी तीसरी चौथी

अगले ही क्षण हल्दी घाटी मौत के चीत्कारो से भर गई।

इधर राणा प्रताप और माना झाला ने बडी तेजी से काम किया। उन्होने सेनानायको को, सेनानायको ने सैनिको को और हर सैनिक ने दूसरे सैनिक को मेवाड का सदेश सुना दिया, "कमर के दाहिनी ओर कटार बाध लो। यह हमारी निशानी होगी। जिस राजपूत के दाहिने ओर कटार न हो, उसे मुगलो का समझो और काट डालो।"

राजपूतो की दूसरी टोली को मानसिंह रवाना कर चुका था। घाटी होने के कारण दोनो सेनाए आमने-सामने टकरा नही सकती थीं। वे छोटी-बडी टोलियो के रूप मे ही भिड सकती थीं।

राजपूतो से राजपूत टकराए, आजाद राजपूतो से गुलाम राजपूत टकराए, लाल खून से सफेद खून टकराया।

सफेद खून लाल खून के सामने भला कैसे टिकना ? देखते ही देखते मेवाड़ के वीरो ने दुश्मनो को काटकर बिछा दिया और खुशी से चीखते हुए आगे दौड़े, "जय मेवाड़ ! जय राणा !"

मानसिंह और सलीम चिन्तित हो उठे। क्या सख्या मे आधे होते हुए भी राणा के वीर जीतकर रहेंगे ? मानसिंह ने सलीम से कहा, "मैं खुद आगे जाता हू। उसके बिना हालत न सभलेगी।"

सलीम इसके लिए तैयार न था, बोला, "आपको देखकर दुश्मनो का जोश और भड़केगा। आप बीच मे ही रहिए। आगे मैं बढ़ता हू।"

"नही ऐसा नही हो सकता। बीच मे आपको रहना चाहिए। मैं आप पर किसी तरह का खतरा आते नही देख सकता। मैं जाता हू आगे।"

अभी यह बातचीत चल ही रही थी कि मेवाड़ के घुड़सवार करीब आ गए। वे हाथ उछाल उछालकर पागलो की तरह चीख रहे थे। सलीम को दाहिनी ओर और मानसिंह को बाईं ओर बढ़ना पड़ा। कौन आगे आए, यह सवाल रहा ही नही।

८ शाम की हार

भयानक मारकाट मची हुई थी। राणा प्रताप का झण्डा दूर से ही दिखाई पड़ रहा था। मुगल सैनिको का मजबूत मोर्चा मानसिंह के हाथी की रक्षा कर रहा था।

हौदे मे बैठा मानसिंह चेतक पर नजर गड़ाए हुए था। दूर से भी वह स्पष्ट देख सकता था कि जिधर चेतक निकल जाता

है, मेवाड के राजपूत दो की बजाय हजार हाथो से लडने लगते हैं। राणा के हाथ की तलवार बिजली की तरह लपलपाती है और चौगुने मुगल-सैनिको के गले धड से जुदा होने लगते हैं।

मानसिंह ने आसपास फैले सैनिकों की ओर देखा और मन ही मन मुस्कराया—राणा का चेतक कभी मेरी ओर नही बढ पाएगा। राणा शेखचिल्ली के लड्डू खा रहा होगा कि मुझे भाला मारेगा जबकि मेरी परछाईं तक को छू पाना उसके लिए असम्भव है।

फिर भी मानसिंह लगातार महसूस कर रहा था कि जिधर उसका हाथी जाता है, राणा पूरी शक्ति उधर केन्द्रित कर देते हैं। मेवाड के राजपूत जान हथेली पर रखकर लडते हैं। हर राजपूत मरने से पहले कई मुगलो को मसल देता है।

भरी दोपहरी मे खून की होली का यह दृश्य बडा ही रोमाचकारी था।

ग्वालियर और सादडी के झण्डे भी आतक फैलाए हुए थे। राजाराम शाह का हाथी रामप्रसाद साक्षात् मौत का दूत बना हुआ था। युद्ध के शोर को भेदकर बार-बार उसकी चिंघाड सुनाई पडती थी।

सरदार माना झाला के सैनिक खून से सने हुए थे। लेकिन यह उनका अपना खून नही था—वह था उन मुगलो का खून, जो उनसे लडे थे और उनके हाथो मरे थे।

मानसिंह ने अपना हाथी सलीम के हाथी की ओर बढाया और पास पहुचकर कहा, "ग्वालियर का हाथी किसी तरह मारा जाना चाहिए।"

सलीम बहुत अच्छा तीरन्दाज था लेकिन रामप्रसाद के माथे पर लोहे का जाल फैला होने के कारण तीर घसने की गुजाइश ही नहीं थी। मानसिंह ने उपाय सुझाया, "कुछ चतुर सैनिक

रवाना किए जाए, जिनका काम लडना न हो !"

"तो ?"

"वे किसी तरह अपनी रक्षा करते हुए रामप्रसाद तक पहुचें और उसकी ओर माले उछालें। रामप्रसाद विघाडकर सूड ऊपर उठाएगा। ठीक उसी समय उसके मुह के भीतर तीर मारा जाए।"

"उपाय तो जबरदस्त है।" सलीम ने मानसिंह की तारीफ की।

तुरन्त सैनिकों के दल रवाना किए गए।

सलीम ने उन्हे रामप्रसाद के करीब पहुचते देखा। जब वे भाले उछाल-उछालकर हाथी का छेडने लगे तो सलीम ने तरकश से तीर निकालकर निशाना साधा।

रामप्रसाद ने सूड फटकारी। दो सैनिक जमीन पर उछल गए।

ठीक तभी सलीम का तीर छूटा और सन् से हाथी के खुले मुह मे घस गया।

रामप्रसाद जोर से विघाडकर पीछे हटा। ऊपर बठा राजाराम शाह गिरते-गिरते बचा। क्या हुआ था समझते उसे देर न लगी।

रामप्रसाद लहूलुहान मुह लिए लड़

नीचे कूद गया।

दूसरे ही ... से

बचाता और द

हुआ वह व्यूह

प्रसाद का निश

उसके पेट के नी

ढाल पर इतनी ...

राजाराम ...



झपटे।

चेतक को सामने देखते ही गजमुक्ता चिंघाडा और सूड फटकारने लगा। सलीम ने भौंहे सिकोडी, राणा प्रताप की खूनी आखो और ताकतवर बाहो का इरादा वह भाप गया था।

सहसा चेतक उछला।

सलीम अपनी आखो पर विश्वास न कर पाया। चेतक के अगले पैर गजमुक्ता के माथे पर टिके हुए थे और राणा के हाथों मे भाला तुल रहा था।

सलीम की छाती को ताकतवर राणा ने भाला फेंक दिया। उसी समय चेतक की गर्दन के नीचे गजमुक्ता की सूड का झापड पडा।

चेतक उलटत-उलटते बचा। वह जोर से हिनहिना उठा। गजमुक्ता की सूड मे तेज कटार बधी हुई थी जिसने चेतक की गर्दन का मास उधेड लिया।

सलीम बाल-बाल बचा। ज्योही भाला उछला, सलीम साप जैसी स्फूर्ति से हौदे मे लेट गया। भाला सिर के ऊपर से निकला और हौदे की छत से टकराकर जमीन पर उछल गया।

"टूट पडो!" वह चीखा, लेकिन उसके चीखने से पहले ही मुगल-सैनिक राणा पर झपट चुके थे।

चेतक की छलाग से गजमुक्ता अकबका गया था। अपनी जिन्दगी में उसे कभी ऐसा अनुभव नही हुआ था। वह इतनी तेजी से पीछे हटा था कि वार बचाने के लिए झुका सलीम हौदे मे खिलौने की तरह इधर से उधर हो गया था।

माना झाला दग थे। राणा प्रताप को इतनी चपलता से लडते कभी नही देखा था उन्होने। लेकिन यह चपलता कब तक स्थिर रह पाएगी? राणा के चारो ओर मुगलो का सागर लहरा रहा था। मेवाड का यह वीर नायक क्या आज सदा के लिए सो

उछल गई।

मौत अब सामने दिखाई दे रही थी लेकिन राजाराम डरने की बजाय उत्साह से भर गया और दूनी गति से तलवार चलाने लगा। झन्न ! झन्न ! खटाक !

अकेला राजाराम सैकडो को कैसे हराता ? उसके बेटे मदद के लिए आना चाहते थे लेकिन दुश्मनो ने उन्हे दूर ही छेक रखा था। उन्होने अपनी आखो के सामने पिता की बोटी-बोटी कटते देखी।

घायल हाथी रामप्रसाद जमीन पर पडा बुरी तरह हाफ रहा था। दद के कारण उसकी आखें लाल हो गई थी। उसके मुह मे लगा तीर बाहर निकाल लिया गया था, पर इस हगामे म दवा का कोई प्रवन्ध होना असम्भव था।

"जय मेवाड ! जय एकलिंग !" नारे लगाकर राजाराम शाह के वीर बेटे दुश्मनो पर टूट पडे और अगले ही क्षण चारो ओर से घेर लिए गए। एक के बाद एक वे मौत के घाट उतरने लगे—आजादी की देवी को उनके खून की जरूरत थी।

माना झाला और राणा प्रताप चाहकर भी उनकी मदद नहीं कर सकते थे। वे भी शत्रुओ से बुरी तरह घिरे हुए थे।

"मानसिह की कायरता तो देखो। अपना हाथी सामने लाकर हमसे युद्ध करने की बजाय वह सनिको की मजबूत आड लिए हुए है।"

माना झाला लडते जा रहे थे और राणा से कहते जा रहे थे, "आप अचानक सलीम की ओर झपटिए। उसके सनिक असावधान हैं। वे समझते हैं कि आप मानसिह को छोडकर सलीम पर हमला नहीं करेंगे। सलीम को मार डालिए ! मैं आपके साथ हू।"

राणा प्रताप को प्रस्ताव जच गया। दोनो वीर राजपूतो ने अचानक पैतरा बदला और सलीम के हाथी गजमुक्ता की ओर

झपटे।

चेतक को सामने देखते ही गजमुक्ता चिंघाडा और सूड फटकारने लगा। सलीम ने भौंहें सिकोडी, राणा प्रताप की खूनी आखों और ताकतवर बाहो का इरादा वह भाप गया था।

सहसा चेतक उछला।

सलीम अपनी आखो पर विश्वास न कर पाया। चेतक के अगले पैर गजमुक्ता के माथे पर टिके हुए थे और राणा के हाथो मे भाला तुल रहा था।

सलीम की छाती को ताकतवर राणा ने भाला फेक दिया। उसी समय चेतक की गर्दन के नीचे गजमुक्ता की सूड का झापड पडा।

चेतक उलटत-उलटते बचा। वह जोर से हिनहिना उठा। गजमुक्ता की सूड मे तेज कटार बधी हुई थी जिसने चेतक की गदन का मास उधेड लिया।

सलीम बाल-बाल बचा। ज्योंही भाला उछला, सलीम साप जैसी स्फूर्ति से हौदे मे लेट गया। भाला सिर के ऊपर से निकला और हौदे की छत से टकराकर जमीन पर उछल गया।

"टूट पडो!" वह चीखा, लेकिन उसके चीखने से पहले ही मुगल सैनिक राणा पर झपट चुके थे।

चेतक की छलाग से गजमुक्ता अकबका गया था। अपनी जिन्दगी में उसे कभी ऐसा अनुभव नही हुआ था। वह इतनी तेजी से पीछे हटा था कि वार बचाने के लिए झुका सलीम हौदे मे खिलौने की तरह इधर से उधर हो गया था।

माना झाला दग थे। राणा प्रताप को इतनी चपलता से लडते कभी नही देखा था उन्होने। लेकिन यह चपलता कब तक स्थिर रह पाएगी? राणा के चारो ओर मुगलो का सागर ८। था। मेवाड का यह वीर नायक क्या आज सदा के

जाएगा ?

नही, यह नही हो सकता !

माना झाला तलवार से रास्ता बनाते हुए राणा की ओर बढे। उन्होने चेतक की ओर देखा जो घायल गर्दन के कारण विकल हो रहा था लेकिन स्वामी का पूरा साथ दे रहा था।

मानो झाला के दिमाग मे एक कौंध हुई—

'चेतक की पीठ पर चमडे के पट्टो के सहारे मेवाड का झण्डा खडा किया गया है जो काफी दूर से दिखाई पड रहा है। इसी झण्डे के कारण तो राणा के चारो ओर मुगलो की सख्या बढ रही है। यदि इस छात्र को मैं अपने मस्तक पर धारण कर लेता तो? तो दुश्मन समझेंगे कि मैं ही राणा प्रताप हू। वे मुझे घेर लेंगे। राणा बच जाएगे।'

उसे अपनी ओर बढते देखकर राणा चिल्लाए "झाला ! दूर रहो ! यहा मारे जाओगे।"

लेकिन मारे जाने से कभी कोई राजपूत डरा है ? माना झाला ने एड लगाई। अब उनका घोडा ठीक चेतक की बगल मे था। उन्होने हाथ बढाकर राणा के मस्तक से मेवाड के राज्य-चिह्नो को अपने सिर पर धारण करने की चेष्टा की।

"झाला ! पागल हुए हो ?" राणा चीखे।

मुगलो का नारा उठा, "अल्ला हो अकबर !"

राणा का ध्वज तथा राज्यचिह्न माना झाला के मस्तक पर लग चुके थे। जिन मुगल सैनिको ने यह काण्ड देखा था, उन्हें माना झाला की तलवार पृथ्वी से विदा कर चुकी थी।

"मारो ! मारो राणा को !" मुगलो ने झाला को घेर लिया।

झाला ने राणा की ओर अतिम मुस्कान फेंकी और जूझ गए। झण्डा फहराते हुए लडते और हुकारते हुए वीर झाला राणा से दूर भाग रहे थे—ज्यादा-से-ज्यादा दूर ताकि राणा पर कोई

खतरा न रहे

राणा ने गहरी सास ली। माना झाला अब जीवित नही बच सकते हैं। लेकिन

९ ओ नीले घोड़े के सवार

ऊपर से लुढकाने के लिए बची सारी शिलाए नीचे ठेल दी गईं। २१ जून, १५७६ के खूनी दिन की दोपहर बीत चुकी थी। दोपहर मेवाड के लिए जीत लेकर आई थी लेकिन उसके बाद के समय ने मुगलो का साथ दिया था। २२ हजार राजपूतो मे से लगभग ६ हजार मारे जा चुके थे। जो बचे थे, वे थकान से अधमरे हो रहे थे।

मुगलो के मारे गए सैनिको की सख्या ५ हजार थी। अगर युद्ध जारी रखा जाता तो अधमरे राजपूतो मे से अधिकाश मौत के घाट उतर जाते। मुगल-सैनिक उनकी तुलना मे आधे भी नही थके थे क्योकि सख्या मे दुगने होने के कारण उन्हें ज्यादा परिश्रम नही करना पडा था।

राणा ने चेतक की पीठ थपथपाई। चेतक हिनहिनाया। तसल्ली की कोई जरूरत नही थी।

माना झाला के पीछे भाग रहे सैनिको के बीच से रास्ता बनाकर बाहर निकल आना राणा के लिए मुश्किल नही था। मेवाड के राजपूतो का जो दल सबसे करीब था, राणा उसी मे शामिल हो गए।

तुरही बजाकर मैदान से जगल मे चले जाने का इशारा कर दिया गया। इसके सिवा और कोई चारा न था। अगर तुरही न

बजती तो एक एक राजपूत मैदान मे खप जाता, पर इससे कोई फायदा न था। मर खप जाने के बाद मेवाड पर मुगलो का अधिकार स्थायी हो जाता, लेकिन अगर राजपूत जीवित रहे तो वे फिर से विद्रोह की मशालें जलाकर गुलामी का अन्धकार दूर कर सकते थे।

घायल चेतक राणा प्रताप को लेकर हल्दी घाटी से दूर दौड रहा था। गदन के नीचे से तथा दूसरे घावो से इतना खून रिस चुका था कि उसकी शक्ति अब आधी भी नही थी, लेकिन दौडने मे उस स्वामीभक्त जानवर ने कोई कमी न रखी।

शाम अभी घिरी नही थी। सूरज पश्चिम की ओर से करीब डेढ बास ऊपर चमक रहाथा।

राणा ने पीछे मुडकर देखा तो चौक गए। दो मुगल घुडसवार चेतक का पीछा कर रहे थे। 'क्या इन्होने मुझ पहचान लिया ?' चेतक मे इतना दम नही था कि सामना करने लायक स्फूर्ति अपनी टागो मे भर सकता। तब ?

राणा ने चेतक को थपथपाकर एक पगडडी पर मोड दिया। पेड-पौधे तेजी से पीछे भाग रहे थे। घुडसवार लगातार पीछा कर रहे थे।

चेतक झटके के साथ रुक गया और अगले दोना पैर उठाकर उछला। सामने एक पहाडी पर नाला आ गया था। कितना गहरा है यह ? राणा ने नाले को पहचानने की कोशिश तो की लेकिन थकान से झनझनाते दिमाग और जलती आखो ने साथ न दिया।

जगल इतना घना था कि चेतक उनके बीच से रास्ता नही बना सकता था। पीछे से नगी तलवारें लिए मुगल आ रहे थे। केवल एक ही रास्ता बचता था—चेतक जल्दी-से-जल्दी नाले को पार करे।



उसी समय पीछे मे आवाज आई, "ओ नीले घोडे के सवार!"

परिचित स्वर!

कौन है यह?

राणा ने शका से पीछे देखा—शक्तिसिंह?

हा, वह शक्तिसिंह ही था। वह बडी तेजी से नाले की ओर बढ रहा था। दोनो मुगलो के घोडे उसके आगे-आगे दौड रहे थे। उन्होने चिल्लाकर शक्तिसिंह से कहा, "राणा भाग रहा है, पकडो!"

राणा प्रताप ने होठ काटे। दो मुगल तो थे ही, तीसरा शक्तिसिंह भी उनसे आ मिला!

चेतक हाफ रहा था। उसकी आखें पीडा और थकान मे फट रही थी। "चल मेरे बेटे!" राणा ने उसकी गर्दन थपथपाई और उसे जरा पीछे लिया। अगले ही क्षण चेतक तीर की तरह नाले की दिशा मे दौड पडा। उसके कदम आत्मविश्वास स भरे हुए थे। उसकी एक-एक रग तन रही थी, एक-एक पुट्ठा जोश से थिरक रहा था। उसकी दुम उत्तेजित होकर ऊपर उठ गई थी।

इस बार नाले के कगार पर पहुचते ही वह जोर से हिनहिनाया और उछलकर उस पार चला गया।

छलाग लगाकर चेतक नाले के उस ओर गिरा ही था कि राणा प्रताप ने उसे एक झाडी की ओट मे ले लिया ताकि मुगल या शक्तिसिंह द्वारा कटार आदि का वार न हो सके। झाडी चेतक को मुश्किल से ओट दे पाई थी कि वह लडखडाया और जमीन पर ढह गया। राणा कूदकर उसके नीचे उतर चुके थे। चेतक दम तोड रहा था, हमेशा के लिए विदा हो रहा था। राणा भावुक होकर उसके गले से लिपट गए, "चेतक! नही चेतक!" लेकिन उनके प्रिय घोडे

जि दगी की आखिरी सिरहन उसकी रगो मे लहराकर मौत के साए म रेंग गई।

राणा की आखें छनक आईं। चेनक की लाश पर दो गर्म आसू ढुलकाकर वह उठने की कोशिश करने लगे। पाव सुन हो गए थे। उ होने तलवार की मठ पकडनी चाही लेकिन उगलियो ने साफ जवाब दे दिया।

क्या मेवाड का यह सिंह अन्तिम समय मे कवल तीन दुश्मनो से भी लड नही पाएगा ? क्या बिना लडे ही उसका सिर उतर जाएगा ?

"महादेव एकलिंग ! मुझे शक्ति दो !" राणा न इष्टदेव का याद किया। झाडी की टहनिया हटाकर उन्होंने नाले के उस पार देखा। दानो मुगला के घोडे किनारे पर ही रुक गए थे। मुगल उ ह नाला पार करने क लिए उकसा रहे थे लेकिन वे दुम दबाए खडे थे।

शक्तिसिंह कहा है ?

राणा ने मुगला क पीछे पीछे पगडण्डी पर नजर दौडाई। शक्तिसिंह का घोडा धूल उडाता हुआ आया और मुगला के घोडो के पास रुक गया। शक्तिसिंह ने तलवार खींच ली।

एक मुगल ने अपनी तलवार स झाडी की ओर इशारा किया, 'राणा घायल होकर उसके पीछे "

वाक्य पूरा भी न हुआ था कि खच्च से शक्तिसिंह ने उसका सिर काट लिया। उसे चीखने का भी मौका न मिला। कटा सिर गद की तरह उछलकर नाले मे जा गिरा।

राणा को अपनी आखो पर विश्वास न आया—शक्तिसिंह ने राणा प्रताप और स्वत त्र मेवाड के दुश्मन शक्तिसिंह ने अपने ही सैनिक का गला उतार लिया !

दूसरा मुगल हतप्रभ रह गया था। एक क्षण को वह समझ

ही न पाया कि उसने क्या देखा, फिर उसने आगे बढ़कर शक्तिसिंह पर वार करना चाहा लेकिन तब तक उसका सिर भी उतर चुका था।

शक्तिसिंह ने तलवार का खून मुगलो के कपडों से पोछा। फिर कपाल पर उभर आए पसीने को एक उगली से निचोड कर टपकाया और गहरी सास ली। पीछे मुड़कर उसने दूर तक नजर दौडाई, कहीं कोई और तो नही आ रहा है। फिर नाले के उस पार की झाडी की ओर मुह करके हाक लगाई, "ओ नीले घोडे के सवार ! पीली धूप के राजा !"

एक क्षण के लिए राणा का मन हुआ कि ओट से बाहर निकल आए और कह उठें, 'भया !' लेकिन उ होने अपने को रोका—कही यह भी शक्तिसिंह की चाल न हो। उसने मुगलो को शायद इसलिए मारा हो कि प्रताप को अपने ही हाथो से मौत के घाट उतारकर बादशाह अकबर से वाहवाही लूटे।

शक्तिसिंह ने घोडे को एड लगाई और पानी मे कूदकर आगे बढने लगा। राणा ने तलवार की मूठ पर थकी उगलियो को भीचा और फुसफुसाए, "जय एकलिंग !"

शक्तिसिंह मुस्कराया। उसने अपनी तलवार एक ओर फेंक दी, कटार और भाला भी फेंक दिया और घोडे से उतरकर बोला, "मुझे मारना चाहते हो, भैया ? लो, मारो !" वह सिर झुकाकर खडा हो गया।

राणा की आखे भर आइ। "भैया !" कहकर वह दौडे और शक्तिसिंह से लिपट गए।

दोनो की आखो से खुशी के आसू बहने लगे।

चेतक की लाश से लिपटकर शक्तिसिंह भी रोया। राणा ने गद्‌गद स्वर मे कहा, "शक्ति, माना झाला मारे गए, राजाराम शाह मारा गया, राजाराम के बहादुर बेटे मारे गए। अब तुम

वापस मत जाओ। हम दोनो मिलकर फिर से मेवाड की स्वाधीनता के लिए मुगलो से लड़ेंगे।"

शक्तिसिंह ने डबडबाई आखें भाई की ओर उठाई, "अगर पिंजरे का गुलाम तोता किसी तरह उड भी जाय तो आजाद तोते उसे अपने दल मे शामिल नही करते। चोच मार-मार कर उसकी जान ले लेते हैं।"

"तुम कहना क्या चाहते हो, शक्तिसिंह ?"

"मुगलो से मिलकर मैं प्रसन्न तो नही हू, लेकिन मैं वापस मेवाड कैसे आ सकता हू ? हो सकता है, आपके सामने कोई मुझसे कुछ न कहे लेकिन आपके पीछे कोई भी मुझ पर व्यग्य कर सकता है।"

शक्तिसिंह ने अपना घोडा राणा को दे दिया ताकि वह सुरक्षित स्थान तक जा सकें और स्वय नाले मे कूदकर तैरता हुआ उस पार चला गया। राणा अपलक उसी ओर देखते रहे। उन्हे आशा थी कि वह वापस मुडकर एक बार जरूर देखेगा, लेकिन उसने एक बार भी न देखा और पगडण्डी के मोड पर पहुचकर ओझल हो गया मानो कभी आया न हो।

१० गोगुन्दा पर कब्जा

रात हुई। जीत की खुशी के नगाडे बजाते और नाचते मुगल-सैनिको ने मशालें जला ली। खूनी कीचड, धूलधूसरित लाशो और कटकर पडे सिरो, हाथो पैरो आदि के कारण भयकर युद्ध-भूमि वीभत्स हो उठी थी।

जमादारो के दल सफाई के लिए रवाना कर दिए गए थे जो

वेशर्मी से गालियां बक रहे थे। हर दल के साथ एक-एक गाडी थी जिसे घोडे हाक रहे थे। बिखरी हुई हड्डियो, कटे पडे अगो, मनुष्यो और जानवरो की लाशो आदि को उठा-उठाकर गाडी मे ठूसा जा रहा था।

मुगलो के हकीम ने घायल रामप्रसाद के मुह मे दवाए लगाईं। रामप्रसाद हमला न कर दे, इस डर से उसे रस्सो से जकड दिया गया था। मरहम-पट्टी का काम पूरा हो गया, तो उसके बन्धन खोल दिए गए। वह सूड फटकारता और चिघाडता हुआ उठ खडा हुआ।

ग्वालियर का वीर हाथी अब मुगलो की कद मे था। भाला-धारी सैनिको ने उसे चारो ओर से घेर लिया। पीछे के सनिको ने भालो की नोकें चुभा-चुभाकर उसे आगे चलने पर मजबूर किया।

रामप्रसाद के विराट शरीर को देखकर सलीम की गरदन गर्व से तन गई उसके एक ही तीर से यह बलवान हाथी जमीन पर गिरकर फैल गया था।

राजा मानसिंह की ओर देखकर सलीम मुस्कराया, "जीत के नजराने के रूप म रामप्रसाद को बादशाह सलामत के पास भेज दिया जाए?"

"वेशक!" मानसिंह मुस्कराया, "बादशाह सलामत इसे देखकर खुश होंगे।"

दो दिनो मे रामप्रसाद काफी ठीक हो गया। हकीम ने जाच करके कहा कि अब वह चल-फिर सकता है। अकबर उन दिनो फतेहपुर सीकरी मे था। रामप्रसाद के गले मे लकडी का घण्टा बाधा गया, जिसे टनटनाता हुआ वह फतेहपुर सीकरी की ओर रवाना हो गया। उसके आगे पीछे सैनिको के मजबूत दस्ते चल रहे थे क्योकि चौबीसो घण्टे राणा प्रताप के छापमार दलो तथा

भीलो का खतरा बना रहता था। सुरक्षा के लिए स्वय मानसिंह भी हल्दी घाटी से बत्तीस मील दूर तक रामप्रसाद के साथ गया था।

गोगुन्दा पर हमले की तैयारिया हो रही थी। गोगुन्दा राणा प्रताप का महत्वपूण किला था। अफवाह सुनाई पड रही थी कि हारने के बाद राणा ने उसी मे शरण ली है। उस पर हमला करने के लिए जरूरी था कि हल्दी घाटी को पार करके उस ओर निकला जाता। इसमे बडा खतरा था।

हल्दी घाटी के दोनो ओर की पहाडियो पर से भीलो ने चट्टानें लुढकाकर मुगल-सेना मे जो तबाही मचा दी थी, उसे याद करते ही सैनिको के रोंगटे खडे हो जाते।

अन्त मे सलीम और मानसिंह ने तय किया कि सैनिको की टुकडिया दोनों पहाडियो का चप्पा-चप्पा छान मारें। अगर कोई ऐसी चट्टान दिखाई पडे जो लुढ़काने के लिए साधकर रखी गई हो तो उसे घाटी मे उतार दिया जाए।

चौकन्ने सैनिक चल पडे। सचमुच ऐसी कई चट्टानें मिली जो नाममात्र के इशारे से ही घाटी मे लुढक जाती और सैनिको की जान ले सकती थी। "हट जाओ ! सावधान !" पहाडी के ऊपर से सैनिक चिल्लाते और झाककर नीचे देखते कि कोई है तो नही।

बारीकी से जाच-पडताल करने के बाद चट्टान के नीचे भाले डाले जाते और मूठ पर झटके देकर चट्टान लुढका दी जाती।

जब विश्वास हो गया कि अब खूनी चट्टानो का भय नही रहा तो शोर मचाती मुगल-सेना हल्दी घाटी पार करने लगी। सेना के अधिकारियों की आखें हर समय पहाडियो की ओर लगी

[illegible] ऐसा न हो कि प्रताप के गुप्त दस्ते ऊपर से तीर बरसाने लगें।

जगह-जगह हड्डियों के ढेर पड़े थे। कई लाशें उठाने को रह गई थीं जिन्हें गिद्ध, चील, कौए आदि नोच रहे थे। डरपोक कौए लोगों को देखकर उड़ जाते और कांय-कांय करने लगते। चीलें कम डरपोक थीं। कुछ उड़कर मंडराने लगतीं, कुछ लाशों पर ही जमी रहतीं। गिद्ध बिल्कुल डरपोक नहीं थे। वे पास से गुजरते लोगों को बड़ी लापरवाही से देखते और तसल्ली के साथ लाशें नोचते रहते। कई लाशें बुरी तरह सड़ गई थीं। उनके आसपास की हवा विषैली बू से भरी हुई थी।

मानसिंह का हाथी शान से आगे बढ़ रहा था। सहसा किसी कौए के मुंह से हड्डी छूटी और ठीक मानसिंह के सामने आ पड़ी। चंवर डुलाते सेवक ने तुरन्त उसको उठाकर नीचे फेंक दिया।

उदास मानसिंह ने गहरी सांस ली—यह हड्डी किसी राजपूत की होगी। गुलामी कितनी बुरी है! मैं खु[illegible] हो[illegible] ज-
पूतों को मार रहा हूं।

घाटी कुशल से पार कर ली गई। [illegible]
उभर रहा था। उसके [illegible] छाई
लग रही थी, साम[illegible] ।

सलीम ने अ[illegible]
कहा, "गोगुंदा व[illegible]
बिना लड़े ही राज[illegible]

मानसिंह हंसा[illegible]
राणा प्रताप हा[illegible]
कायरता पर नहीं[illegible]

"कोई बात नहीं[illegible]



रहती—कही ऐसा न हो कि प्रताप के गुप्त दस्ते ऊपर से तीर बरसाने लगें

जगह-जगह हड्डियो के ढेर पडे थे। कई लाशें उठाने को रह गई थी जिन्हे गिद्ध, चील, कौए आदि नोच रहे थे। डरपोक कौए सैनिको को देखकर उड जाते और काय-काय करने लगते। चीलें कम डरपोक थी। कुछ उडकर मडराने लगती, कुछ लाशो पर ही जमी रहती। गिद्ध बिल्कुल डरपोक नही थे। वे पास से गुजरते सनिको को बडी लापरवाही से देखते और तसल्ली के साथ लाशें नोचने लगते। कई लाशें बुरी तरह सड गई थी। उनके आसपास की हवा घिनौनी बू से भरी हुई थी।

मानसिंह का हाथी शान से आगे बढ रहा था। सहसा किसी कौए के मुह से हड्डी छूटी और ठीक मानसिंह के सामने आ पडी। चवर डुलाते सेवक ने तुरन्त उसको उठाकर नीचे फेंक दिया।

उदास मानसिंह ने गहरी सास ली—यह हड्डी किसी राजपूत की होगी गुलामी कितनी बुरी है! मैं खुद राजपूत होकर राजपूतो को मार रहा हू।

घाटी कुशल से पार कर ली गई। गोगुन्दा का किला सामने उभर रहा था। उसके आसपास छाई खामोशी दूर से रहस्यमय लग रही थी, साथ ही डरावनी भी।

सलीम ने अपना हाथी मानसिंह के हाथी की ओर बढाते हुए कहा, "गोगुन्दा का किला ज्यादा बडा नही है। मैं सोचता हू, बिना लडे ही राजपूत दरवाजे खोल देंगे।

मानसिंह हसा, "यह क्यो भूलते है कि गोगुन्दा के भीतर राणा प्रताप हाजिर हो सकते है? उनके रहते कोई राजपूत कायरता पर नही उतरेगा।'

"कोई बात नही," सलीम ने जवाब दिया, "हम सबको



काटकर फक देंगे। शायद राणा गिरफ्तार भी हो जाए।"

मानसिंह चुप रहा।

कुछ देर बाद सेना का बढने से रोक दिया गया। अधिकारियो ने मोर्चे के हिसाब मे अपनी-अपनी टुकडियो को अलग अलग दिशाओ म बढाना शुरू किया। गोगुन्दा को घेरा जा रहा था। उसके उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम—चारो दिशाओ मे टुकडिया फैल गईं।

रात हो चली थी।

कुछ समय के लिए सनिकोंका आराम दिया गया। उसके बाद उन्होन हल्का नाश्ता किया क्योकि भरपेट खाना खाने पर उनकी फुर्ती कम हो जाती। गोगुन्दा का घरा रातो रात कस दने का इरादा पक्का किया जा चुका था। नाश्ते के साथ थोडी-थोडी शराब भी दी गई, जिससे उनकी रगो मे नया जोश भर गया। उनके दाढी वाले चेहरे रात क अधर मे खौफनाक लग रहे थ। मशालें जल रही थी। उनकी लौ सैनिकों की आखो म चमक रही थी।

"बढो!" एक साथ सभी सेनाधिकारियो ने अपनी टुकडियो को हुक्म दिया।

गडडड गड्क् धम गडक धम् गडक् धम्

नगाडो का शोर उभरा जो क्रमश तेज होता गया। बीच बीच मे तुरही की आवाज गूज उठती। बड-बडे ढोल निदयता से धुने जाने लगे

गिजगिजगिज ढकाक्क् ढकाक्क

'अल्लाहो अक्बर!' उत्तेजक संगीत स फडककर सनिक चिल्ला उठत और तेजी मे दौडने लगत।

घेरे के किसी एक बिन्दु से नारा उठता जा गोगुन्दा के चारो ओर छल्ले की तरह रेंग जाता।

"हय !"

"आ ऽऽऽ !"

"हुम्म् दौओड़ो आ ऽऽऽ !"

घोड़े हिनहिनाते, हाथी चिंघाड़ते। रथों के दौड़ने की घड़घड़ाहट आकाश को भी सहमा देती।

घेरा कहां कितना कस गया है, इसका पता उन मशालों से लगता था, जो सैनिकों की हर टुकड़ी के पास एक-एक थी। हर चार टुकड़ियों के बीच में ऊंटों पर उत्तेजक बाजों वाले बैठे थे—गिजगिजगिज ढकाक्क् ढकाक्क्

जैसी कि सबको आज्ञा दी गई थी, कुछ देर बाद सारी मशालें बुझा दी गई।

अब गोगुंदा के भीतर के राजपूतों को ठीक-ठीक पता न चल सकता था कि घेरा कहां तक आगे आ गया है। हिनहिनाते घोड़ों आदि की आवाजें बहुत ही धोखेबाज थीं। कभी लगता कि घोड़े एकदम पास हिनहिना रहे हैं, कभी लगता, वे काफी दूर हैं। सैनिकों ने चिल्लाना, हुंकारना भी एकदम बन्द कर दिया था।

जोश दिलाने वाले वाद्य भी खामोश थे, क्योंकि खुद खामोशी ही अब बेहद जोशीली हो उठी थी।

अंधेरे में मुगलों की तोपें जमाई जाने लगीं। हल्दी घाटी में इन तोपों का कमाल नहीं दिखाया जा सका था। वहां भारी-भरकम तोपों का आगे लाकर जमाना और निशाने लेना असम्भव ही था। यदि असम्भव को सम्भव किया जाता तो भी पहाड़ियों के ऊपर से लुढ़कती चट्टानें तोपों के मुंह इधर उधर कर देतीं। मुगल तोपचियों को जमकर युद्ध करने का मौका ही न मिला।

था।

घेरा डालने मे रात बीत गई। पूरब मे जब थोडी-थोडी रोशनी फूटनी शुरू हुई तो मुगलो की एक तोप ने धाय से पहला गोला उगल दिया।

जोर का धमाका हुआ। आग की बहुत बडी जीभ अ धेरे मे लपलपा गई। हवा मे कपकपी की लहरें तैरने लगी। घाटी देर तक थरांती रही। बारूद की तीखी बू चारो ओर फैल गई।

गोला उछलकर किले के भीतर गिरा और सर्वनाश फैलाता हुआ फटा।

अगले ही क्षण गोगुन्दा की तोपें भी गरज उठी—धडाम! धाय!

धुआ बारूद की गध घायलो की कराहटें

बीच-बीच मे गोलाबारी रुकती तो नगाडे, तुरही आदि का शोर उभर आता।

सुबह हुई।

दोनो ओर से साय साय तीर छूटने लगे। राजपूतो के तीर किले की दीवार से नीचे की तरफ जाते थे। अत उनमे भरपूर तेजी थी। मुगलो के तीर नीचे से ऊपर जाते थे। उनमे उतनी तेजी न आ पाती थी। लेकिन मुगलो के तीरो के फल जहर से बुझे हुये थे। उनसे लगी छोटी सी खरोच भी जान ले लेती थी।

राजपूतो के पास उतने अच्छे जहर-बुझे तीर नही थे। उन्हे तो अपनी बाहो पर विश्वास था जो धनुष की प्रत्यचा को कान तक खीच-खीचकर टकार रही थी।

लेकिन जैसी कि सलीम को आशा थी गोगुन्दा का पतन

होने मे ज्यादा देर न लगी। दोपहर होते-होते उसका दरवाजा खोल दिया गया और बचे खुचे राजपूत बाहर निकल आये। वे केसरिया वानो मे थे—लहू से तर। जब तक उनके सिर धड से जुदा न हो जाते थे, वे दुश्मनो को काटते रहते थे। वे पागलो की भाति चीख रहे थे।

उत्तेजना से राजपूत योद्धाओ की आखें फैल गई थी। उनके घोडो मे कमाल की फुर्ती थी। घाव लगने पर गिरते-गिरते भी वे दो-चार को घायल कर देते। मौका मिलने पर वे दुश्मनो का मास उतार लेते और फडकते हुए उछल पडते।

सलीम ने मानसिंह की ओर देखा, "जब राजपूतो को मालूम है कि वे जरूर हारेंगे तो ख्वाहमख्वाह अपनी जान क्यो देते हैं?"

मानसिंह मन ही मन गर्व से हसा, बाहर से गम्भीर बना रहा।

राणा प्रताप गोगुन्दा मे नही थे, क्योकि होते तो युद्ध मे अवश्य सामने आते। जब राजपूतो की आखिरी टोली भी कट-कटकर टुकडो मे बदल गई, तब मुगलो ने किले मे प्रवेश किया।

मानसिंह ने दूत भेजकर पता लगवाया कि किले मे जौहर हुआ है या नही।

दूत ने वहां से लौटते ही सूचना दी कि जौहर नही हुआ है। स्त्रियो को पहले ही कही और पहुचा दिया गया था। बच्चे, बूढे तथा रोगी भी उनके साथ चले गये थे।

घायल सैनिको की तीमारदारी का इतजाम किया गया। गोगुदा मे चिडियो, कुत्तो, बिल्लियो और चूहो आदि के सिवा कोई नहीं था, जो सैनिकों का स्वागत करता या उन्हे कोई काम करने से रोकता।

"आका हुजूर!" दूत ने सलीम के सामने जाकर कोरनिश बजाई, "गोगुन्दा के किसी भी कुए का पानी पीने के लायक नही

है। राजपूतो ने मरने से पहले सभी कुओ मे कूडा-करकट डालकर पानी गंदा कर दिया है। हमारा पानी खत्म हो चला है। सिपाही प्यास से तडप रहे है।"

समस्या सचमुच ही गम्भीर थी। इतनी बडी फौज के लिए पानी का बन्दोबस्त कैसे किया जायेगा ?

कई घुडसवार टुकडिया उसी क्षण आसपास के कस्बो और गावो की ओर रवाना कर दी गईं। हर सवार के पास मशक थी।

लेकिन ये छोटे छोटे कुए आखिर कब तक इतनी बडी फौज की प्यास बुझाएगे ? चार-पाच दिनो मे ही वे खाली हो जाएगे। तब ?

आसपास कुछ झरने थे जरूर, लेकिन वहा सशस्त्र भीलो की टोलिया मडरा रही थी।

मानसिंह बोला, "साप-छछू दर वाली दशा है। न उगलते बनता है, न निगलते।"

सलीम ने भौंहे सिकोडी, "मैं तो समझ नही पाता कि राणा का दिमाग कहा तक दौड सकता है। मानो वह पहले से जानता था कि हमला होगा और हमले मे उसकी हार होगी। इसी से उसने मेवाड को उजाड दिया। अब बताइए, हम यहा रुककर क्या करें ? पानी के लिए सैनिक झरनो की ओर बढते है तो भीलो के तीर बरस पडते हैं, फलो के लिए जगल मे घूमना चाहते है तो राजपूतो की नगी तलवारें दिखाई पडती हैं। एक फल के लिए एक सिर तो नही दिया जा सकता।"

रामप्रसाद फतेहपुर सीकरी पहुच गया था। बादशाह अकबर ने उसे बहुत पसन्द किया था, लेकिन इस जीत मे उसे ज्यादा

खुशी नही हुई थी। उसने मानसिंह के नाम सन्देश भिजवाया, "हमे बडा अफसास है कि आप के रहते हुये भी राणा प्रताप जीवित रह गया। हल्दी घाटी मे हमारी जीत हुई, यह बेशक खुशी की बात है, लेकिन अधूरी जीत के बहुत ज्यादा मायने नही होते। हम जीत के साथ-साथ प्रताप का सिर भी चाहते है।"

सन्देश से स्पष्ट झलक रहा था कि अकबर को मानसिंह पर राजपूतो के प्रति पक्षपात का शक है, हालाकि मानसिंह पूरी ईमानदारी से लडा था। बात चुभ जानी स्वभाविक थी।

हल्दी घाटी मे राणा प्रताप की हार के समाचार आग की तरह चारो तरफ फल गए थे, लेकिन आश्चय की वात यह थी कि इसस राजपूतो मे निराशा फैलने के बजाय जोश भडक उठा था।

मुगल गुप्तचर अक्सर समाचार लाते कि विद्रोह की तैयारिया हो रही ह। माना झाला और राजाराम शाह ने जिस गौरव से वीरगति प्राप्त की थी, उससे अनेक राजपूत सामन्तो के भीतर बगावत के अगारे दहकने लगे थे।

सलीम और मानसिंह बडे चक्कर मे पडे। चारो ओर विद्राह की छिपी तयारिया तो हो ही रही थी, लेकिन खुला विद्राह कही नही हुआ था। यह तय करना बडा मुश्किल था कि सेना को किधर रवाना किया जाए।

फिर, कही पर खुला विद्रोह हो जाए, तो भी सेना रवाना करना खतरे से खाली नही था। मानसिंह और सलीम अच्छी तरह जानते थे कि ज्योही सेना गोगुदा छोडेगी, राणा प्रताप उस पर छापा मार दगे।

मुगल-सेना ने आगे बढकर उदयपुर के मुख्य किले तथा आसपास के दूसरे किलो पर भी अधिकार जमा लिया। राणा प्रताप की तलाश करने के लिए चारो ओर गुप्तचर रवाना कर दिये

गए। कभी समाचार आते कि राणा इस पहाड़ी मे छुपे हैं और कभी पता चलता कि उस पहाडी मे। नगी तलवारें लिए मुगल सैनिको के दल पहाडियो को रौंद डालते, लेकिन प्रताप का कही आभास तक न मिल पाता।

११ सूरज पश्चिम मे निकलेगा ?

राणा प्रताप कन्दरा से बाहर आए और चारो ओर सतर्क दृष्टि से देखने लगे। उनका तेजस्वी चेहरा दुर्बल लग रहा था लेकिन आखो की चमक वैसी की वैसी थी। भरी-भरी मूछे ऊपर उठी हुई थी। रोए-रोए से शौर्य टपक रहा था।

प्रताप का बडा बेटा अमरसिंह कन्दरा की दीवार से टिककर बैठा था। उसे कडाके की भूख लगी थी। वह रह-रहकर चूल्हे की ओर देख लेता था।

यह पाचवा चूल्हा था।

यह पाचवी कन्दरा थी।

कितना सघर्षमय हो गया था जीवन ! खाना पाचवी बार बनाया जा रहा था।

सुबह पहली बार चूल्हा जला और खाना पका था। भोजन परोसे जाने की तैयारिया हो ही रही थी कि एक सेवक ने हाफते हुए कन्दरा मे प्रवेश किया था और सूचना दी थी, "महाराज, मुगल टुकडी तेजी से इस दिशा मे बढ रही है।"

पका पकाया भोजन धरा रह गया था और सब भागने की तैयारिया करने लगे थे।

एक घण्टे बाद उन्होने दूसरी गुफा मे शरण ली थी। राणा

प्रताप की रानियो ने फिर से खाना पकाया था और परोसकर सबके सामने रखा था। अभी मुश्किल से दो-एक कौर भरे गए थे कि फिर से सैनिक हडबडाया हुआ भीतर आया, बोला, "महाराज, भागिए ! दुश्मनो को इस गुफा का भी पता चल गया है।"

महाराणा के छोटे छोटे बच्चो को जब थाल के सामने से उठाया गया तो उनकी आखें छलछला आई। कल रात भी उन्हे खाना नही मिला था, बडे जोर की भूख लगी थी। बेचारे बच्चे बिलखकर रो भी तो नही सकते थे क्योकि बिलखने पर दुश्मनों के सुन लेने का भय था। चुपके-चुपके आसू टपकाना वे अपने-आप सीख गए थे।

"चलो बेटे, चलो बेटी, किसी और गुफा मे चलो ! वहा हम फिर से खाना खाएगे, अच्छा ?" राणा प्रताप ने कापते हाथो से उनकी पीठ थपथपाई और उन्हे सेवको के साथ घोडो पर बैठा दिया।

तीसरी गुफा मे पहुचकर तीसरी बार खाना पकाया गया, लेकिन इस बार भी हा, इस बार भी पका खाना ज्यो का त्यो छोडकर भाग जाना पडा। दुश्मनो की टोली इस गुफा की दिशा मे भी बढ रही थी।

जब तक ये चौथी गुफा ढढते, दोपहर ढल चुकी थी। राणा प्रताप और राजकुमार अमरसिह तो पेट की आग सहन कर सकते थे लेकिन यह नन्हे-नन्हे बच्चो के बस की बात नही थी। राणा की रानिया, जिन्होने कभी मखमल-बिछे फर्श से बाहर कदम न रखा था, आज पथरीली, जगली पगडडियो पर भटक रही थी, दर-दर की ठोकरें खा रही थी। भूख सहन करना उनके भी बूते की बात नही थी।

फिर आज विधाता जैसा मजाक कर रहा था, वह तो और भी असहनीय था ! तीन बार खाना पका, परोसा गया और

खाया न जा सका। तीसरी बार तो राणा की एक बच्ची ने जलते हुए भात मे हाथ डाल दिया था, जिससे बेचारी की उंगलियो मे छाले पड गये थे।

चौथी गुफा मे पहुचते ही रानियो मे से एक ने कहा "इस बार खाना पकाया ही न जाए तो अच्छा रहे, क्योकि शत्रु तो यहा भी आ पहुचेगे। हमारे पास जो चावल था, वह भी तो तीन बार पकने के बाद बहुत कम बचा है।"

व्यग्य का तीखा बाण छोडा गया था, लेकिन राणा उसे एकाएक न समझ पाये, बोले, "लेकिन रानी, हमारे बच्चे बहुत भूखे हैं।"

"बच्चे आपके कहा है ?" रानी ने आखिर कह ही दिया, "बच्चे तो आपकी रानियो के है। आपके होते, तो आप उनकी सुख सुविधा का खयाल न रखते ?"

अब राणा की समझ मे असली बात आई। वह रानी की ओर देखते ही रह गए। किसी तरह बोले, "तुम्ही बताओ रानी, तुम लोगो के आराम के लिए मै क्या करू ?"

रानी चुप रही।

राणा कहते गए, "मैं आजादी की लडाई लड रहा हू। जब सफलता मिलेगी तो राजमहल भी वापस मिल जायेगे। दु ख के दिन किसी तरह गुजार लो।"

"गुजारना चाहे या न चाहे, गुजारने तो पडेगे ही।" रानी ने फिर व्यग्य किया।

राजकुमार अमरसिंह बीच मे पडा, "जल्दी खाना पकाओ, भूख लगी है।"

रानी ने पत्थरो के तीन टुकडे जमाकर चूल्हा बनाया और टहनिया सुलगाने लगी।

खाना बना। लेकिन इस बार तो परोसा भी न जा सका।

दुश्मन की एक टोली इधर भी आ निकली और राणा को यह गुफा भी छोड़ देनी पड़ी।

और अब पांचवीं गुफा में, पांचवें चूल्हे पर, पांचवीं बार खाना पकाया जा रहा था।

लेकिन क्या इस बार खाने का अवसर मिलेगा?

शाम होने ही वाली थी। उदास सूरज धीरे-धीरे क्षितिज की ओर ढल रहा था।

चूल्हे पर रखा पानी खौलने लगा।

राणा प्रताप भारी हृदय के साथ कन्दरा से बाहर निकले और चारों ओर सावधानी से देखने लगे। पगडण्डी के मोड़ पर उन्हें अपनी ही सेना का एक घुड़सवार नजर आया जो बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहा था।

बौखलाया हुआ वह राणा के सामने उतरा और बोला, "महाराज " उसका गला रूंधने लगा। खखारकर बोला, "दुश्मन फिर से आ पहुंचे "

"कोई बात नहीं!" राणा लाचारी से हंसे, "भीतर जाकर रानियों से कहो, खाना पकाना छोड़ें और दूसरी गुफा तक चलने की तैयारियां करें।"

"महाराज, मैं कुछ फल लाया हूं। दुश्मनों से आंख बचाकर फल तोड़ना भी तो एक समस्या है। जहां भी फलों के पेड़ हैं, दुश्मनों ने अपनी चौकियां बिठा रखी हैं।"

"फल बच्चों को दे दो। वे भूखे हैं।"

"जो आज्ञा।" वह तेजी से कन्दरा की ओर बढ़ गया।

राणा ने लौटकर अमरसिंह से कहा, "बेटा, इस बार आस-पास कहीं डेरा डालने की बजाय जितनी दूर हो सके, निकल चलो।"

जब इन्होंने भीलों की बस्ती में प्रवेश किया तो रात हो चली

थी। अमरसिंह ने एक झोपडी का दरवाजा खटखटाया। भील बाहर निकला। राणा को देखते ही वह पहचान गया। उसका चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा, बोला, "मेरे अहोभाग्य, जो आप मेरे मेहमान बने। आइए, स्वागत है!"

झोपडी के पीछे झुरमुट की ओट मे घोडे बाध दिए गए। भील ने झटपट कडाह मे दूध गर्म किया और सबको एक एक कटोरा दिया। पीकर दम मे दम आया। उसके बाद भोजन की तैयारिया की गई।

"जानते हो भाई, हमने आज पाच बार भोजन बनाया, लेकिन एक बार भी न खा सके—भागना पड गया।" राणा हसे।

"मातभूमि के लिए आपका त्याग अनोखा है!" भील ने विभोर होकर कहा।

"नही भाई, मातृभूमि के लिए तो लोग न जाने क्या क्या कर डालते हैं। मैं तो बहुत पीछे हू"

भील ने उत्तर दिया, "सूरज को सूरज कहने की जरूरत नही होती, अन्नदाता, उसे सभी जानते हैं।"

खाना खाकर सभी ने थोडा आराम करना चाहा। महाराणा प्रताप भी एक कोने मे बैठ कुछ सोच रहे थे कि अमरसिंह ने भीतर प्रवेश किया। अचानक उसकी पगडी नीची छत के एक बास से अटककर खुल गई। उसे पिता की उपस्थिति का ध्यान न रहा और वह बोल गया, "जब तक अकबर जसे बादशाह का विरोध करना है, ऊची छत वाले महलो के दर्शन थोडे ही होंगे।"

"अमर! राणा उत्तेजित होकर उठ खडे हुए। बस, एक ही शब्द! शर्म से मुह छुपाकर अमरसिंह दूसरे कमरे मे चला गया।

राणा रातभर करवटें बदलते रहे—अमरसिंह मेरा बेटा अमर उसे ऊचे छत वाले महल चाहिए देव एकलिंग! क्या



यही दिन देखने के लिए तूने मुझे जिन्दा रखा ?

दूसरे दिन की सुबह राणा को बहुत उदासी लगी। आकाश लाल हुआ और उसके बाद पहाड़िया की चोटिया सोने से नहाने लगी, पर राणा के दु खी मन मे जसे गम रेत का तूफान उठ रहा था। जिस अमर को वह अपने-जैसा ही त्यागी और वीर समझते थे, उसके मन मे महलो का विचार आया ही क्यो ? मेरे बाद मेवाड का भार उसी के कन्धो पर आने वाला है, क्या वह आजादी की मशाल में अपना खून जलाता रह पाएगा, कही वह भी मुगल बादशाह के चरणो मे झुककर गिडगिडाने न लगे— मुझे अपना सामन्त बना लो मेरा राज्य ले लो और मुझे महल दे दो गद्देदार पलग और दास-दासियां

प्रताप ने होठ काटे।

सुबह ही राणा वहा से भी रवाना हो गए। भील रोकना चाहता था, लेकिन आसपास मडराते शत्रुओ के कारण उसका आग्रह मानना सम्भव नही था।

अमरसिंह पिता से झपता हुआ अपना घोडा अलग अलग ले चल रहा था। प्रताप ने यह देखा तो स्वय उसके करीब आए और बोले, "हर व्यक्ति मे कमजोरिया होती हैं। उनके लिए झेंपना नही चाहिए बल्कि उन्हे दूर करना चाहिए।"

"जी " अमरसिंह केवल इतना कह सका।

कई दिन बाद एक अधेरी सूनी गुफा मे पड़ाव डाला गया था।

अमरसिंह राणा प्रताप के पास आया, "पिताजी, आज भोजन के लिए कुछ नही है। हमारे सैनिक घास की रोटिया पकाने जा रहे हैं। हम भी आज घास की ही रोटिया खा लें, क्या हर्ज है।"

राणा की आखें भर आईं।

कन्दरा से दो बच्चे खेलते हुए बाहर आए। इनके शरीर पर

मास कहा है ? एक-एक हड्डी गिनी जा सकती है। आखें गढ़ो मे उतर गई हैं। देखा तक नही जाता इनकी ओर, डर लगता है—कही चलते-चलते गिर न पड़े !

राणा का मन विद्रोह कर उठा। उन्होने मुह हथेलियो मे छिपा लिया—मुझे क्या हक है इन सबको कष्ट देने का ? मैं मरू या जिऊ, जो चाहे करू, लेकिन मेरे कारण ही सब क्यो भूखे रहे ? क्यो अधनगे रहे ?

"क्या सोच रहे हैं, पिताजी ?"

"ओह कुछ नही, कुछ नही। तुम क्या कह रहे थे ? घास की रोटिया बनाओगे ? जरूर बनाओ, मैं भी खाऊगा। ठहरो, मैं भी घास चुनने साथ चलता हू।"

"नही पिताजी, आप रुकिए।"

लेकिन राणा न माने।

थोडी ही दूर पर कुछ अच्छी किस्म की घास का मैदान था। सभी वहा पहुचे और घास चुनने लगे। कुछ ही देर मे उनकी उगलिया दर्द करने लगीं, लेकिन पेट की आग तो बढती ही जा रही थी

कन्दरा के भीतर रोटिया पक रही थी। प्रताप कपाल पर हाथ रखकर एक पत्थर पर बैठे थे। अचानक वह चौके। उन्होने सिर उठाकर देखा, उनकी नन्ही सी बिटिया रो रही थी।

"क्या बात है बेटी ?"

"मेली लोती बिल्ली ले गई।" बिटिया ने रोते हुए एक ओर इशारा किया। एक बिल्ली मुह मे रोटी दबाए भागी जा रही थी। प्रताप की आखे छलक आईं। महलो की राजकुमारी एक रोटी के लिए—घास की बनी एक रोटी के लिए इस तरह रो रही थी ! उसकी मा झल्ला पडी, "चुप रह, निगोडी चुप रह !"

"गाली क्यो देती हो रानी ? उसका क्या अपराध है ?"

"अपराध जिसका है, उसे मैं कैसे गाली दू ?" रानी ने निर्दयता से कहा।

प्रताप ने रोती बच्ची को गोद मे भर लिया, "हा, अपराध मेरा है। मेरे ही कारण सबकी यह दशा हुई। चलो, मैं तुम्हे यह अधिकार देता हू, जितनी चाहो, गालिया दे लो। लेकिन इस फूल-सी बच्ची को "

पूरी बात सुने बिना ही रानी उठकर दूसरी ओर चली गई। प्रताप के दो गर्म आसू बिटिया के कन्धे पर ढलके।

सारी रात जागते हुए बिता देना राणा के लिए नई बात नही थी लेकिन आज तो मन की पीडा सीमा पार कर रही थी। उन्हे अपना ही वाक्य याद आया, 'हर व्यक्ति मे कमजोरिया होती हैं—'

ऐसी ही एक कमजोरी आज उभर रही थी उनके मन मे—बादशाह अकबर से सन्धि कर ली जाए ! तब यों मारे-मारे फिरने की आवश्यकता न होगी। रानियो को रहने-सोने के लिए ढग की जगह मिलेगी। उनके मुह से कडवे वचन न निकलेंगे। फूल-' से कोमल बच्चे उफ ! इन बेकसूरो को तो आराम मिलेगा।

कन्दरा के बाहर तूफान सू-सू कर रहा था। कई बार हवा से उडकर सूखे पत्ते भीतर आ जाते और खडखड की आवाज करने लगते।

प्रताप उठे। उन्होने सेवक को जगाया और गम्भीर होकर कहा, "तुम्हे दिल्ली जाना है—अभी !"

"दिल्ली ?" सेवक को अचरज हुआ, क्यो, महाराज ?"

"बादशाह अकबर के नाम एक सन्देश लेकर ?" राणा का गला थरथरा रहा था।

□

"नही ! यह नही हो सकता !" राय पृथ्वीराज उत्तेजना से



बोल उठा।

"हो कैसे नहीं सकता ?" बादशाह अकबर मुस्करा पडा, "राणा प्रताप ने खुद हाथ से खत लिखा है। भरोसा न हो तो देख लीजिए।"

राय पृथ्वीराज ने बादशाह से खत लिया। उसे अपनी आखो पर विश्वास न हो सका।

"नही, यह नही हो सकता !" वह फिर बुदबुदाया। उसके हाथो मे राणा प्रताप का खत काप रहा था। उसे समझते देर न लगी कि राणा ने सन्धि का यह प्रस्ताव किन्ही कमजोर क्षणो मे ही लिखा है। वह अकबर के सामने अदब से झुका और बोला, "मैं एक अज करना चाहता हू।"

"कहिए !"

"आप मुझे राणा के नाम खत लिखने की इजाजत दीजिए। मैं उनसे पुछवाना चाहता हू कि क्या सचमुच जो उन्होने लिखा है, ठीक है ?"

"आप चाहते हैं तो शौक से पुछवाइए ! इसकी जरूरत मैं नही समझता।"

"लेकिन मैं समझता हू !"

राय पृथ्वीराज उन दिनो के बहुत अच्छे कवियों मे गिना जाता था। वह बीकानेर के राय कल्याणमल का छोटा बेटा था। बीकानेर की अधीनता स्वीकार करने के बाद उसे बादशाह अकबर की सभा मे रहना पडता था। वह अच्छी तरह जानता था कि उसकी कविता मे कितनी ताकत है। उसे पूरा विश्वास था कि वह राणा प्रताप की कमजोरी को दूर कर सकेगा, उनमें नया जोश भर सकेगा। उसने राणा के नाम सदेश भिजवा दिया।

"पातल जो पतसाह, बोले मुख हूता बयण।
" मिहर पछम दिस माह, उगै कासप राववत ॥

"पटकू मूछा पाण, कै पटकू निज तन करद।
"दोजे लिख दीवान, इण दो महलो बात इक॥"

(जिस तरह मैं विश्वास नही कर सकता कि सूय पश्चिम से निकलता है, उसी तरह मैं इस पर भी विश्वास नही कर सकता कि राणा प्रताप बादशाह अकबर की अधीनता स्वीकार कर सकते हैं। अत हे दीवान, बताओ, सचाई क्या है ? मुझे अपनी तलवार से अपनी ही गर्दन काट लेनी चाहिए या गर्व से मस्तक उठाकर रखना चाहिए ?)

जब राय पृथ्वीराज का दूत महाराणा प्रताप से मिला, तो उनकी दयनीय दशा और दयनीय हो चली थी, लेकिन राय पृथ्वीराज का सन्देश पढते ही उनकी भुजाए फडक उठी। जिस प्रकार अगारे पर राख की पत चढ जाती है, लेकिन जरा-सा फूकते ही वह फिर से दहक उठता है, इसी प्रकार राणा की कमजोरी दूर हो गई और वह सिह की तरह हुकार उठे। तुरन्त उन्होने राय पृथ्वीराज को उत्तर लिखवाया

"तुरक कहासी मुख पतौं इण तनसू इकलिग।
"ऊगै जाहि ऊगसी, प्राची बीच पतग॥
"खुसी हूत पीथल कमध, पटको मूछा पाण।
"पछटन है जेतै पतो, कलमा सिर केवाण॥
"साग मूड सहसी सको, समजस जहर सवाद।
"झड पीथल जीतो झला, वैण तुरक सू वाद॥"

(मैं देव एकलिंग की सौगन्ध खाकर कहता हू कि अकबर के लिए मेरे मुह से 'तुर्क' शब्द ही निकलेगा। सूर्य जहा से उदित होता है, वही से होगा। आप अपना मस्तक गर्व से उठाए रख सकते हैं क्योकि प्रताप की तलवार हर समय मुगलों के सिर पर झूलती रहेगी। यदि अकबर की प्रसिद्धि को मैंने सहन कर लिया तो यह राणा सागा के खून की लाज डुबोने वाली बात होगी।

राय पृथ्वीराज, शब्दो के इस युद्ध में आपकी जीत हुई है, किसी को इस पर सन्देह नहीं हो सकता !)

राणा प्रताप ने आखें सिकोडीं। सामने यह कौन घुडसवार आ रहा है ? चेहरा तो जाना-पहचाना-सा मालूम पडता है !

दोपहर ! धूप की कौंध से बचने के लिए प्रताप ने आखो पर हथेलियों की छाया की गर्म हवा का झोंका आया, उनके सूखे बाल उडे। घुडसवार दौडकर उनके पावो पर झुक गया।

उनका चेहरा खुशी से चमक उठा। अरे, यह तो भामाशाह है। मारवाड का प्रसिद्ध व्यापारी भामाशाह ! भामाशाह को गले से लिपटाते हुए वह बोले, "भामा ! आप यहा कैसे ?"

"बताता हू, अन्नदाता, पहले पानी तो पिलाइए !"

राणा ने कटुता से कहा, "पानी तो पिला दूगा, पर खाना मत मागिएगा। नही है।"

मानो नाटक कर रहा हो, यो भामाशाह ने नाक पर उगली रखी और आखें तरेरी, "शी ई चुप रहिए, घणी खम्मा, वरना उल्टे पाव लौट जाऊगा।"

पानी पीकर भामाशाह पास ही चट्टान पर बैठ रहा, फिर गम्भीरता से बोला, "आपकी एक चीज मेरे पास है। मैं उसे लौटाने आया हू।" —

"मेरी चीज ?" राणा को अचरज हुआ, आपके पास ? नही तो !"

"आप भूल गए होगे, पर मुझे याद है।"

"कौन-सी चीज, भाई ?"

भामाशाह उठ बैठा और कुछ देर तक चुपचाप राणा की ओर देखता रहा, "पहले वादा करिए कि आप उसे ग्रहण करेंगे,

वापस नही करेंगे।"

"अगर चीज मेरी हुई तो क्यो वापस करूगा ?" राणा मुस्कराए। वह समझ न पा रहे थे कि भामाशाह इतना गम्भीर क्यों है।

"तब सुनिए, मेरा सारा धन आपका ही दिया हुआ है। उसे वापस लीजिए। मरने से पहले मैं यह कर्ज उतारना चाहता हू।"

"क्या कहते है आप ? भला आपका धन मेरा कैसे हुआ है ?"

"मैंने सारा धन मेवाड से व्यापार करके ही तो कमाया है ! मेवाड आपका है, धन भी आपका हुआ न ? ओह, कैसी दुगम पहाडियो मे आप बसते हैं ! खोजते-खोजते मेरा तो दम निकल गया। दो एक भीलो मे पूछा तो गुप्तचर समझकर मेरी जान लेने पर तुल गए। हां तो बताइए, आपका धन कहा, कैसे और कब पहुचाया जाय ?"

"लेकिन भामाशाह "

"लेकिन-वेकिन मैं नही जानता, अन्नदाता ! आप मेरे क्षमा कीजिए अपने धन से नई सेना का सगठन करिए, हथियार बनवाए और मेवाड से मुगलो को बाहर करिए।"

राणा की आखें भर आईं। कितने दिनो के बाद आज सच्ची खुशी के आसू छलके थे !

१२ दीपक बुझ गया

झालोर, जोधपुर इडार, नोडोल, बूदी तथा अन्य स्थानो मे सहसा विद्रोह की आग भडक उठी। राणा प्रताप के दूत बडी तेजी से इस आग को और दूर दूर तक फैला रहे थे।

अभी तक प्रताप का बसेरा पहाडियो मे था, जहा राजपूत

टोलियों मे भामाशाह का धन नया जोश भर रहा था। हथियारो की अब कमी नही थी और साहस का देवता राजपूतो पर पहले से ही कृपालू था।

मानसिंह के क्रोध से कापते हाथो मे अकबर का पत्र हिल रहा था, जिसे अभी-अभी दूत ने उसे दिया था। अकबर ने इस बार साफ लिख दिया था कि मानसिंह ने जान-बूझकर राजपूतो का विद्रोह दबाने मे पूरी जिम्मेदारी से काम नही लिया है।

"आप शाहजादा सलीम के साथ हमसे जल्द मिलिए। अब हम मेवाड का दौरा खद करना चाहते हैं। इसके लिए पहले हम अजमेर मे कुछ दिन रुकेंगे। आप दोनो हमसे वही मिलें।"

सन्देश की ये पक्तिया मानसिंह की आखो के सामने बार-बार घूम जाती और वह चहलकदमी करता हुआ होठ काटता।

मुगल सेना का भार दूसरे सेनापतियो को सौंपकर सलीम व मानसिंह अजमेर की ओर रवाना हुए और कुछ ही दिनो मे मेवाड धधक उठा।

इधर राणा प्रताप की चमचमाती तलवार की कौंध से मुगल सैनिको की आखें अधी होने लगी। "जय मेवाड! जय एकलिंग!" के नारो के साथ राजपूत गोगुन्दा पर टूटे और उसे अधिकार मे कर लिया। घुडसवार राजपूत आधी की तरह उदयपुर की ओर टूट पडे। किले के बन्द दरवाजे बन्द न रह सके। आजादी की लपटो ने उनकी कुण्डिया पिघला दी।

"भून डालो!" राणा की हुकार आकाश तक गूज उठी।

उदयपुर भी अब राणा के कब्जे मे था, मेवाड का अधिकाश भाग अचानक मुगलो के हाथ से निकल गया। इतने बडे विद्रोह की तैयारिया इतनी गुप्त रीति से की गई थी कि अकबर दग रह गया।

"मैं सरोही से आया हू।" एक दूत ने राणा के सामने सादर



अभिवादन पूर्वक कहा।

"सरोही ?" महाराणा आगे को झुके, "वहा दो सामन्तो का अधिकार था न ?"

"जी हा, महाराज," दूत बोला, "एक सामन्त राव सुरतान और दूसरे आपके भाई जगमल।"

"वहा के विशेष समाचार ?"

"सरोही ने अकबर के खिलाफ विद्रोह कर दिया है।"

"अच्छा ?" राणा की आखें दमकी, "क्या हमारा भाई भी विद्रोह मे शामिल है ?"

दूत नीचे देखने लगा।

'क्या बात है ? तुम चुप क्यो हो गए ?"

"अभयदान मिले, अन्नदाता "

"हा हा कहो ! हमने वचन दिया।"

"आपके भाई ने विद्रोह मे राव सुरतान का साथ न दिया। उनमे युद्ध हुआ। आपके भाई उसमे काम आए।"

प्रताप एक क्षण चुप रहे, फिर मुस्कराए, "देशद्रोही की मृत्यु का कभी शोक नही मनाया जाता।"

"महाराज, राव सुरतान ने यही सूचना देने व क्षमायाचना के लिए मुझे आपके पास भेजा है।"

"जब उन्होने अपराध ही नहीं किया तो क्षमायाचना कैसी ?" राणा मृदुता से बोले, 'उनसे कहिएगा कि जगमल जैसे कायर भाई की मृत्यु के समाचार से हमे कोई दु ख नहीं हुआ है। मेवाड और सरोही दोनो विद्रोही हैं। इस नाते हम दोनो भाई हुए।"

१९ जनवरी, १५९७।

राणा प्रताप पिछले कई दिनो से बीमार थे। आज तो उन-

की हालत बहुत ज्यादा बिगड गई थी। वह ५७ साल के हो चुके थे। अमरसिंह को पास बुलाकर उन्होंने कहा, "बेटे, अब मुझे लगता है मेरे महाप्रयाण का दिन आ गया है।"

"ऐसा न कहिए, पिताजी!" अमरसिंह की आवाज रुध गई।

"बेटे, जीवन भर मैं यवनो से युद्ध करता रहा। 'देव एक-लिंग' की कृपा से आज लगभग पूरा मेवाड हमारे सूर्यमुखी झण्डे के नीचे स्वतन्त्र है, परन्तु आज भी तीन किले हम मुगलो से नही छीन पाए हैं—चित्तौड, अजमेर और मण्डलगढ। वचन दो अमर-सिंह, मेरे बाद तुम इन तीनो को अवश्य स्वतन्त्र करोगे।"

"वचन देता हू, पिताजी।"

सारे कुटुम्बी, दरबारीगण, नामी वैद्य तथा पण्डित राणा की शय्या को घेरकर खडे थे—शय्या घास-फूस की शय्या! अन्त समय मे भी राणा गद्दे दार शय्या पर नही लेटे। उनका प्रण पूरा नही हुआ था—चित्तौड को स्वतन्त्र करने का प्रण!

उन्होने अमरसिंह का हाथ दबाया, "मैं अपना अधूरा प्रण तुम्हे सौंप रहा हू। पूरा करोगे न?"

"आप निश्चिन्त रहिए, पिताजी।"

राणा की रगो मे तनाव आने लगा। अमरसिंह ने उनकी पलको को हथेलियो मे मूद दिया। पण्डित गगाजल के साथ आगे बढा।

मन्त्रोच्चार की गम्भीर ध्वनि वातावरण मे तैरने लगी—महाज्योति बुझ रही थी

अधूरा प्रण

किन्तु महाराणा प्रताप का अधूरा प्रण साढे तीन सौ साल तक पूरा नही हो सका। वर्ष पर वर्ष बीतते गए। राज बदले। सत्ता बदली। महाराणा के शपथ की आन मानने वाले राजपूत सरदार और उनके वशज पीढियो तक उनके व्रत का पालन करते रहे।

महाराणा ने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक चित्तौड नही जीत लेते तब तक महलो मे निवास नही करेंगे, सोने के थाल मे भोजन नही करेंगे और आमोद प्रमोद का जीवन नही बिताएगे। इसी प्रण के कारण राजपूत सरदार बन्जारो की तरह जीविका के लिए बैलगाडियो पर सपरिवार यहा से वहा भटकते रहे— सीकों के छप्पर के नीचे सोते हुए, पत्तलो या मिट्टी के बरतनो मे खाते हुए और जीवन-यापन के लिए कठिन सघर्ष करते हुए। आज उनकी अपनी एक सस्कृति है। उन्हे 'गाडिया लुहार' कहा जाता है।

स्वतत्रता के उस महान सेनानी को देश भूला नहीं। १६४७ मे भारत स्वतन्त्र हुआ और भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू ने साढे तीन सौ वर्ष बाद आन-मान के धनी महाराणा का 'अधूरा प्रण पूरा किया। विदेशियो से मुक्ति मिलते ही उन्होने एक विशेष समारोह मे व्रतधारी राजपूतो को ससम्मान चित्तौड का गढ अर्पित किया।

□